हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 25 मई 2025

10 एसडीएम ने 11 हट्टा बाजार का किया दौरा, दुकानदारों ...

11 3 कॉलेजों को मिले नए पीजी कोर्स, नए सत्र से होंगे दाखिले

खबर संक्षेप

विद्या भारती स्कूल में बच्चों ने किया मनोरंजन

नारनौल। विद्या भारती पब्लिक स्कूल में गर्मी से राहत व बच्चों के मनोरंजन के लिए पूल पार्टी का आयोजन किया गया। इस पार्टी में विद्यालय के बच्चों ने ट्रैमपोलिन में झूले का मजा उठाया। बच्चों ने मौज-मस्ती कर पूल पार्टी का आनन्द लिया। इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव, वाइस चेयरपर्सन डॉ. उषा यादव, प्रबंधक निदेशक एडवोकेट पीयूष यादव, निदेशक डॉ. रविन्द्रा यादव, प्राचार्य विनोद कुमार, उप प्राचार्य सपना मल्होत्रा, किड्स ब्लॉक इंचार्ज विजय सोनी सहित समस्त अध्यापकगण उपस्थित थे।

पक्षियों के लिए कबरपुर स्कूल में रखे सकोरे

नारनौल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अकबरपुर के साथ मिलकर प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट ने पक्षियों के लिए घौंसले व पानी के सकोरे रखवाने का प्रकल्प आरम्भ किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. संजय शर्मा व ट्रस्टी नरोत्तम सोनी ने बताया कि प्राचार्या सीमा यादव के नेतृत्व में अकबरपुर स्कूल में प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट की ओर से बढ़ती गर्मी को देखते हुए पक्षियों के लिए घौंसले तथा पीने के पानी का प्रबंध किया गया। विद्यालय में अलग अलग जगह पर पक्षियों के लिए पानी के लिए सकोरे व घौंसले टांगे गए व दाने के लिए प्रबंध किया।

दौंगड़ा अहीर आर्य समाज सम्मेलन शुरू

मंडी अटेली। आर्य समाज सम्मेलन महोत्सव का शुभारंभ वैदिक यज्ञ के साथ हुआ, जिसमें श्रद्धालुओं और विद्वानों ने आहुति प्रदान कर आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया। प्रातःकालीन सत्र में कार्यक्रम की अध्यक्षता जगराम आर्य ने की, वहीं मंच पर देशभर से आए विद्वान महात्माओं ने अपने विचार रखे।

स्लम एरिया टैलेंट के बच्चों को भेंट की पाठ्य सामग्री

नारनौल। स्लम एरिया टैलेंट की ओर से काफी सालों से बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने का कार्य किया जा रहा है। इसी कार्य को देखते हुए समाज में शिक्षा की अलख जलाने वाले अध्यापकों की ओर से बच्चों को पाठ्य सामग्री भेंट की गई। प्रदीप ने कहा कि स्लम एरिया टैलेंट की टीम बच्चों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का जो प्रयत्न कर रही है, वह बहुत ही नेक कार्य है। ऐसा बहुत कम देखा जाता है कि समाज के बच्चों के लिए कोई निःस्वार्थ भाव से इतना कुछ कर रहा हो।

एसडीएम ने 11 हट्टा बाजार का किया दौरा, दुकानदारों को चबूतरे हटाने के दिए निर्देश

- 2.85 करोड़ की लागत से मसानी चौक से कॉलेज रोड तक की सड़क का होगा निर्माण

हरिभूमि न्यूज ▶▶महेंद्रगढ़

एसडीएम अनिल कुमार ने शनिवार की सुबह 11 हट्टा बाजार का दौरा किया। इस दौरान एसडीएम ने स्थानीय दुकानदारों को चबूतरे हटाने के निर्देश दिए। एसडीएम ने दुकानदारों को चेतावनी देते हुए कहा कि चबूतरे या स्वयं हटा ले, नहीं तो प्रशासन द्वारा कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान दुकानदारों ने एसडीएम को आश्वासन दिया कि वह स्वयं अपने अपने चबूतरे हटा लेंगे।

इस दौरान एसडीएम ने बिजली निगम के अधिकारियों के आदेश दिए की पोल शिफ्टिंग का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाए, ताकि रोड बनाने में असुविधा का सामना न करना पड़े। नगर पालिका द्वारा मसानी चौक से लेकर मॉडल संस्कृति स्कूल तक 2.85 करोड़ की लागत से सड़क का निर्माण किया जा रहा है। बीते दिनों नगर पालिका अध्यक्ष रमेश सैनी ने सड़क निर्माण कार्य में घटिया सामग्री लगाने का आरोप लगाते हुए निर्माण कार्य बंद करवा दिया था। चेयरमैन ने कहा था कि जब तक निर्माण कार्य नियमों के अनुसार और उच्च गुणवत्ता के साथ नहीं किया जाएगा, तब तक कार्य नहीं करने दिया जाएगा।

महेंद्रगढ़। दुकानदारों से बात करते एसडीएम अनिल कुमार। फोटो : हरिभूमि

बता दें कि बीती 21 अप्रैल को विधायक कंवर सिंह यादव ने हाईप जिम के पास से सड़क निर्माण को लेकर नारियल फोड़कर शुभारंभ किया था। 2.85 करोड़ की लागत से मसानी चौक से कॉलेज रोड तक करीब दो किलोमीटर मार्ग निर्माण होना हैं। इस मार्ग को पुराने नारनौल रोड के नाम से जाना जाता हैं। इस मार्ग पर शहर के मुख्य बाजार भी लगता हैं। इसके अलावा नारनौल से रेवाड़ी की जाने का भी सबसे छोटा रास्ता हैं। इस मार्ग पर मसानी चौक, पाठशाला रोड, परशुराम चौक, बास मोहल्ला, सैनीपुरा, गुर्जरों की ढ़ाणी में हजारों की संख्या में लोग रहते हैं।

टूटी सड़क से परेशानी

टूटी सड़क के कारण लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। इस मार्ग पर पांच-छह फीट की दूरी पर गहरे गड्ढे बने हुए हैं। यह मार्ग दो महाविद्यालय, मॉडल संस्कृति स्कूल, 148-बी से जोड़ता हैं। इसके अलावा यह मार्ग 50 से अधिक गांवों को शहर से जोड़ता है। दिनभर इस मार्ग से हजारों की संख्या में वाहन गुजरते हैं। टूटी सड़क के कारण दिनभर जाम की स्थिति बनी रहती है। इस मार्ग पर 500 से अधिक दुकान हैं, जिसके कारण आमजन, दुकानदारों व राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। शहर के लोगों की माने तो करीब 20 वर्ष पहले इस मार्ग पर सड़क का निर्माण हुआ था।

सैनी धर्मशाला में जिलास्तरीय संगोष्ठी का आयोजन

लोकमाता अहिल्याबाई होलकर को किया याद

हरिभूमि न्यूज ▶▶नारनौल

भाजपा पार्टी की ओर से लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की जयंती पर शनिवार सैनी धर्मशाला में जिलास्तरीय संगोष्ठी आयोजित की गई। मुख्य वक्ता के तौर पर एससी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक सत्यप्रकाश जरावता और प्रदेश कॉर्डिनेटर पीपीपी सतीश खोला उपस्थित रहे। कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव एवं अटेली के पूर्व विधायक सीताराम यादव ने भी उपस्थिति दर्ज करवाई। वहीं भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा और भाजपा जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव भी मौजूद रहे।

महिला मोर्चा की भाजपा जिला अध्यक्ष भारती सैनी ने उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते तथा वर्तमान एवं भावी पीढ़ी तक उनके प्रेरणादायी कृतित्व को पहुंचाने के लिए गठित पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर के जीवन से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि उनका जीवन भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम पर्व है। ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले सामान्य परिवार की बालिका से एक असाधारण शासनकर्ता तक की उनकी जीवनयात्रा आज भी प्रेरणा का महान स्त्रोत है। वे कर्तृत्व, सादगी, धर्म के प्रति समर्पण, प्रशासनिक कुशलता, दूरदृष्टि एवं उज्ज्वल चारित्रय का अद्वितीय आदर्श थीं। उनके दिखाए गए सादगी, चारित्रय, धर्मनिष्ठा और राष्ट्रीय स्वाभिमान के मार्ग पर अग्रसर होना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अहिल्याबाई होलकर एक महान मराठा शासिका और सामाजिक सुधारक थी। उन्होंने इंदौर के होलकर राजवंश की बागडोर संभाली और अपने शासनकाल में राज्य को न्याय, समृद्धि और सुरक्षा प्रदान की।

मुख्य वक्ता पूर्व विधायक सत्यप्रकाश जरावता ने कहा कि अहिल्याबाई होलकर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गांव में हुआ था। उनका विवाह खंडेराव होलकर से हुआ था जो होलकर राजव के शासक थे। 1766 में उनके पति खंडेराव होलकर की मृत्यु हो गई, जिसके बाद अहिल्याबाई ने राज्य की बागडोर संभाली। अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में न्याय, समृद्धि और सुरक्षा प्रदान की। उन्होंने राज्य में सड़कों, पुल और मंदिरों का निर्माण करवाया। उन्होंने गरीबों औरकमजोरों की मदद के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए। उन्होंने शिक्षा को बढ़ावा दिया और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए काम किया।

नारनौल। संगोष्ठी को संबोधित करती महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष भारती सैनी। फोटो : हरिभूमि

मुख्य वक्ता सतीश खोला ने कहा कि महिला कल्याण के लिए उन्होंने विधवाओं को उनकी संपत्ति पर अधिकार दिए और महिला साक्षरता को बढ़वा दिया। समाज से निर्वासित भील और गोंड समुदाय को मुख्यधारा से जोड़ा और उनके जीवन यापन का प्रबंध भी किया। इसके अतिरिक्त कौशल विकास को प्रोत्साहन देने हेतु लोकमाता ने मांडू और सूरत में आमंत्रित बुनकरों को महेश्वर में स्थापित किया और माहेश्वरी सिल्क उद्योग प्रारम्भ भी किया। लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर द्वारा देश भर में विदेशी आक्रमणों से आहत सनातन के पुनरूत्थान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण कार्यों को पूर्ण किया गया।

पूर्व मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा ने कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई होलकर ने काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, अयोध्या, ओम्कारेश्वर, त्रयंककेश्वर और मथुरा जैसे धार्मिक स्थलों पर निर्माण और पुनर्निर्माण के कार्य किए, जो आज भी आस्था के केंद्र है। उनके तीस वर्ष का शासनकाल मानवा प्रान्त के स्वर्णिम काल के रूप में देखा जाता है। अहिल्याबाई होलकर को पुण्यश्लोक की उपाधि से सम्मानित किया गया। जिसका अर्थ पवित्र व्यक्ति है।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर जिला संयोजक अमित मिश्रा, सह संयोजक वासुदेव यादव, नगर परिषद के उपप्रधान संजय यादव, बीसी मोर्चा प्रधान अरूण शर्मा, चेयरमैन राजेंद्र, सरोज बाला, पूर्व मेंबर देवेंद्र यादव, प्रीति सैनी, अजीत कलवाड़ी, अर्चना शर्मा, पार्षद सोनम यादव, पार्षद सिकंदर सैनी, पूर्व पार्षद मीना सोनी, पूर्व पार्षद गीता सैनी, संजय अमन, रविना सोनी, पूर्व पार्षद शशीबाला, पूर्व पार्षद कोमल दायमा, पार्षद सुशीला सैनी, पार्षद सुलतान सैनी, अरूणा शर्मा, अंजू जांगिड़, रेखा सिंघल, महिला मोर्चा से प्रीति सैनी, मंडल प्रधान कविता, कैलाशवंती संधी, विजय लक्ष्मी, रितु शर्मा, मंजू चौहान, पूर्व पार्षद गीता कुमारी, सीमा सैनी, योगिता सैनी, माया सैनी, अनुराधा राजपुत, हुकम कौर, बबली सोनी, अनुराधा सैनी, सपना गुप्ता, सरोज कश्यप, कमलेश सैनी, अलका गोयल, डिंपल जांगड़ा, मनीषा मित्तल, डा.कृष्णा आर्य, सुरेश पटीकरा, महेंद्र गौड़, आनंद महता, युवा मोर्चा प्रधान नरेंद्र यादव, कर्मबीर खींची, प्रदीप गौड़ सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

मंडी अटेली। ऑल इंडिया सैनिक स्कूल परीक्षा में उत्तीर्ण बच्चों को सम्मानित करते हुए।

यूएस सैनिक स्कूल एकेडमी में सम्मान समारोह आयोजित

मंडी अटेली। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा आयोजित ऑल इंडिया सैनिक स्कूल लिखित परीक्षा में अटेली स्थित यूएस सैनिक स्कूल एकेडमी के सात छात्रों ने सफलता प्राप्त की है, जिसमें विजीत कटारिया, अंजली कुमारी, अक्ष कुमार, गर्वित यादव, वर्षा, हर्षित व ख्वाहिश कुमारी शामिल हैं। इस अवसर पर एक सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सेना में अपनी सेवाएं दे चुके सुशील कुमार व विशिष्ट अतिथि शिक्षाविद सहजीत कुमार तथा जितेन्द्र कुमार डीपीई ने शिरकत की। विद्यार्थियों ने अपनी सफलता का श्रेय अपने गुरुजनों व माता पिता को दिया। मुख्य अतिथि ने बताया सैनिक स्कूल सोसायटी द्वारा संचालित सैनिक स्कूलों की परीक्षा में उत्तीर्ण होना विद्यार्थियों के लिए बड़ा गौरव का पल होता है। स्कूल बच्चों के मन में देश प्रेम की भावना ही नहीं भरते, बल्कि उन्हें एक अनुशासित नागरिक भी बनाते हैं। आए हुए अतिथियों व अभिभावकों ने बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर डायरेक्टर प्रमोद कटारिया, मैनेजिंग डायरेक्टर मनीषा, राष्ट्रपाल, रिंकू कुमार, योगिता, अजय कुमार व मनीषा आदि अभिभावक उपस्थित रहे।

सैनिक स्कूल परीक्षा में गणपति शिक्षा निकेतन छात्रों ने लहराया परचम

मंडी अटेली। गणपति शिक्षा निकेतन अटेली मंडी के छात्रों ने अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा परिणाम में पूरे जिले में परचम लहराया है। स्कूल के प्राचार्य सतवीर सिंह ने बताया कि अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा का आयोजन 5 अप्रैल 2025 को नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के द्वारा कि गई थी, जिसमें पूरे भारत के लाखों विद्यार्थियों ने भाग लिया। यह परीक्षा भारत के विभिन्न सैनिक स्कूलों में कक्षा छह और नौं में प्रवेश के लिए आयोजित की जाती है। प्राचार्य ने बताया कि स्कूल के छह छात्रों ने इस परीक्षा को क्वालीफाई करके स्कूल तथा उनके माता पिता का नाम रोशन किया है। उन्होंने कहा कि स्कूल में सैनिक स्कूल, नवोदय स्कूल, नीट, आईआईटी आदि की अलग से कोचिंग करवाई जाती है। इसी सत्र में स्कूल के दो छात्रों का चयन नवोदय स्कूल में भी हुआ है। छात्र गौरव पुत्र राजकुमार गांव बिहाली, कशिश पुत्र सहेंद्र गांव दुबलाना, केशव पुत्र प्रकाश गांव भीलवाड़ा, माही पुत्री रामफल, तन्नु पुत्री सतपाल गांव गुवानी, विवेक पुत्र प्रवीण कुमार गुवानी ने अखिल भारतीय सैनिक स्कूल परीक्षा को क्वालीफाई किया है। वहीं गौरव पुत्र राजकुमार बिहाली व कमल पुत्र धर्मवीर फतेहपुर का नवोदय स्कूल मे प्रवेश हुआ है।

मंडी अटेली। गणपति शिक्षा निकेतन उत्तीर्ण छात्र।

बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम लाने वाले विद्यार्थियों को किया सम्मानित

नारनौल। शहीद विरेन्द्र सिंह राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गढ़ी रूथल में बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम लाने वाले विद्यार्थियों को ग्राम पंचायत, ग्रामीणों, विद्यालय स्टाफ की ओर से सम्मान समारोह आयोजित कर फूल मालाओं से सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्रवक्ता सतीश कुमार ने बताया कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी की ओर से घोषित वार्षिक परीक्षा परिणाम में विद्यालय का 10वीं व 12वीं कक्षाओं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। दसवीं कक्षा में कुल 23 विद्यार्थियों में से 13 विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करके बोर्ड मेरिट में स्थान प्राप्त किया। छात्रा आशु ने 96 प्रतिशत अंक प्राप्त करके प्रथम, कशिश ने 94 प्रतिशत अंक प्राप्त करके द्वितीय, पलक ने 91 प्रतिशत अंक प्राप्त करके तृतीय स्थान प्राप्त किया। साथ ही आशु ने गणित व संस्कृत विषय में 100 अंक और खुशी ने गणित विषय में 100 अंक प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया। इसी प्रकार 12वीं कक्षा में कुल 17 विद्यार्थियों में से 11 विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करके बोर्ड मेरिट में स्थान प्राप्त किया। निक्कू ने 91 प्रतिशत अंक प्राप्त करके प्रथम, मुस्कान ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करके द्वितीय, प्रियंका ने 89 प्रतिशत अंक प्राप्त करके तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के प्राचार्य राजपाल ने सभी विद्यार्थियों व स्टाफ को इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए बधाई दी। इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि ओमप्रकाश लाम्बा, बिरेंद्र लाम्बा, प्रवक्ता राजेश कुमार, श्रद्धानंद, द्रविता, सुनिता, अनिता, अनिल लाम्बा, सुनील डीपीई, अनिल कुमार, मुनिता, प्रमिला, लीलावती, इन्द्रजीत, कृष्ण, देशराज, राजेन्द्र आदि मौजूद थे।

खबर संक्षेप

हैप्पी स्कूल में डीएनए निष्कर्षण व जेल वैद्युतकण संचलन वर्कशाप का आयोजन

महेंद्रगढ़। हैप्पी एवरग्रीन स्कूल में केंद्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा के बायोटेक्नोलॉजी विभाग द्वारा जेल वैद्युतकण संचलन वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप में केंद्रीय विश्वविद्यालय में बायोटेक्नोलॉजी डिपार्मेंट के विभाग अध्यक्ष प्रो.रूपेश देशमुख और प्रो. हुमायरा सोना रामलिंग स्वामी फेलो मुख्यवक्ता के रूप में उपस्थित रहे। इस वर्कशाप का मुख्य उद्देश्य हजारों युवा मस्तिष्कों को सशक्त बनाना है तथा प्रायोगिक अभ्यास के माध्यम से जैव प्रौद्योगिकी के भविष्य को उजागर करना है। कार्यक्रम में मुख्यातिथि प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल, मैनेजर चंचल अग्रवाल और प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल रहे। इस वर्कशॉप में 11वीं और 12वीं कक्षा के जीव विज्ञान के सभी छात्र-छात्रा उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि जेल वैद्युतकणसंचलन में एक जेल बनाया जाता है, जिसमें छोटे छिद्र होते हैं। डीएनए, आरएनए या प्रोटीन के नमूने को जेल में कुओं में लोड किया जाता है। एक विद्युत क्षेत्र लगाया जाता है, जिससे नकारात्मक रूप से आवेशित अणु सकारात्मक इलेक्ट्रोड की ओर सकारात्मक रूप से आवेशित अणु नकारात्मक इलेक्ट्रोड की ओर गति करते हैं।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में आनलाइन आवेदन 6 जून से होंगे शुरू

महेंद्रगढ़। हरियाणा राज्य में स्थित सभी राजकीय एवं निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में सत्र 2025-26 के लिए विभिन्न इंजीनियरिंग और गैर इंजीनियरिंग व्यवसायों में दाखिले के लिए ऑनलाईन आवेदन विभागीय वेबसाइट पर छह से 20 जून तक स्वीकार किए जाएंगे। एमडीएस आईटीआई जाटवास निदेशक एडवोकेट गोपाल शर्मा ने बताया कि दाखिले से संबंधित दिशा-निर्देशों के लिए विवरण पत्रिका, संस्थान की सूची एवं दाखिले के लिए उपलब्ध संस्थावार सीटों बारे सूचना उपरोक्त वेबसाइट पर उपलब्ध होगी। विभिन्न दाखिला चरण के लिए मैरिट एवं सीट अलॉटमेंट जारी होने के पूर्ण कार्यक्रम बारे सूचना दाखिला वेबसाइट पर छह जून से उपलब्ध होगी। इसलिए विद्यार्थी दाखिला वेबसाइट का नियमित अवलोकन करते रहे। विद्यार्थी शैक्षणिक योग्यता, आरक्षण एवं स्थाई निवासी इत्यादि मूल-प्रमाण पत्र की स्कैन प्रतियां, दाखिला फार्म के साथ ही आवश्यकतानुसार अपलोड करनी होगी। दाखिले के इच्छुक प्रार्थियों के पास निजी ई-मेल आईडी, निजी मोबाइल नंबर, परिवार पहचान पत्र एवं आधार नंबर होना अनिवार्य है तथा ऐसे प्रार्थी ही आवेदन के पात्र होंगे।

श्रीकृष्ण स्कूल भुंगारका के 10 विद्यार्थियों का सैनिक स्कूल में चयन

नारनौल। हाल ही में एनटीए की ओर से घोषित ऑल इंडिया सैनिक स्कूल परीक्षा परिणाम में श्रीकृष्ण सीनियर सेकेण्डरी स्कूल भुंगारका के 10 बच्चों का चयन होने पर स्कूल में खुशी का माहौल है। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर स्कूल ने सम्मान समारोह का आयोजन किया। जिसमें विद्यालय के सैनिक स्कूल में चयनित हुए विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। प्राचार्य वेदपाल यादव ने बताया कि विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए अखिल भारतीय सैनिक स्कूल की परीक्षा को उत्तीर्ण करते हुए सैनिक स्कूल में अपना स्थान निर्धारित किया है। जिसमें हिमिका पुत्री अमित कुमार, मयंक यादव पुत्र यादव योगेन्द्र, यश कुमार पुत्र संदीप कुमार, नवनीत पुत्र अनिल कुमार, आयुष पुत्र लीलाराम, वंश यादव पुत्र विरेन्द्र सिंह, हिमांशु पुत्र राजेश कुमार, सौरव पुत्र जयपाल व आयुष पुत्र राजबीर शामिल है। विद्यालय प्राचार्य वेदपाल यादव, चेयरमैन एडवोकेट राजपाल यादव ने बच्चों को इस सफलता के लिए पुरस्कृत किया और उनके अभिभावकों का धन्यवाद किया। प्राचार्य वेदपाल यादव ने कहा कि अभिभावकों ने बच्चे रूपी विश्वास हमारे हाथों में सौंपा था। उसी विश्वास को पौधे की भांति सींच कर हमने सफलता का सच्चा और सुदृढ़ मार्ग प्रदान किया है। प्राइमरी हैड उमा यादव ने कहा कि प्रतियोगिता के दौर में विद्यालय न केवल मेहनत कर रहा है, अपितु उसे साकार भी कर रहा है। बच्चों की लगन, अध्यापक व अभिभावकों की मेहनत ने ही आज इन बच्चों को उनके उज्ज्वल भविष्य की ओर पहुंचाया है। सीईओ अविनाश यादव ने कहा कि शिक्षकों की मेहनत व लगन की वजह से ही आज बच्चों का भविष्य प्रकाश की ओर गया है।

पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर ही सबसे पुण्यदायी कार्यः यशदेव शास्त्री

नारनौल। बाबा निहालचंद सेवादल पटीकरा व स्लम एरिया टेलेंट की ओर से समाजसेवी कृष्ण कुमार ठेकेदार की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर शनिवार को रक्तदान शिविर का आयोजन गांव मंडलाना में किया गया। सेवा दल के प्रधान संदीप राव ने बताया शिविर में युवाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। ब्लड बैंक की टीम ने शिविर में रक्त संग्रहित किया। शिविर में 60 युवाओं ने रक्तदान किया। शिविर में कृष्ण कुमार ठेकेदार को श्रद्धांजलि अर्पित करते मुख्य अतिथि डॉ. यशदेव शास्त्री ने कहा हुए कहा कि पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर से पुण्य कार्य कोई नहीं है। पुण्य तिथि पर रक्तदान की पहल शुरू की गई है, हर साल यह कैंप आयोजित किया जाना चाहिए। मास्टर शेरसिंह व रमेश सूबेदार ने कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा दान होता है, इसलिए हर युवा को रक्तदान शिविर में बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए। शिविर संयोजक संदीप राव ने बताया कि शिविर में रक्तदाताओं को जोशी समाजसेवा समिति जींद के सहयोग से हेलमेट वितरित किए गए। युवांओ को सड़क सुरक्षा का संदेश प्रदान करने के मकसद से यह हेलमेट वितरण कार्यक्रम रखा गया।

सलीमपुर की पूर्व महिला सरपंच व उसके पति पर फर्जीवाड़े का मामला दर्ज

मंडी अटेली। नारनौल कोर्ट के आदेश पर अटेली क्षेत्र के गांव सलीमपुर की पूर्व महिला सरपंच व उसके पति पर फर्जीवाड़े पर केस दर्ज किया गया है। महिला सरपंच ने आठवीं की जाली मार्कशीट देकर सरपंच का चुनाव लड़ा था। गांव के ही व्यक्तियों ने इसको लेकर कोर्ट में याचिका दायर की थी। महिला सरपंच को पहले ही डीसी निलंबित कर चुके हैं। सलीमपुर के सुरेन्द्र व ब्रह्मप्रकाश ने नारनौल की एक अदालत में गांव की पूर्व सरपंच राजेश देवी तथा उसके पति के खिलाफ जालसाजी करते हुए नकली आठवीं की सर्टिफिकेट पर चुनाव लड़ने की शिकायत दी थी। जिसमें उन्होंने कहा था कि राजेश देवी ने ग्राम पंचायत सलीमपुर के सरपंच पद के लिए आवेदन किया था और चूंकि सरपंच पद के लिए आठवीं कक्षा पास होना अनिवार्य था। राजेश देवी आठवीं कक्षा पास नहीं थी। इस अनिवार्यता को पूरा करने के लिए राजेश देवी ने अपने पति धर्मबीर व अन्य व्यक्तियों से मिलकर आठवीं कक्षा की शैक्षणिक प्रमाण पत्र बनवाया। जिसके बाद ग्राम पंचायत सलीमपुर में सरपंच पद के लिए चुनाव लड़ी थी। वह चुनाव भी जीत गई थी। अटेली पुलिस ने धर्मबीर व राजेश देवी पर विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी।

सिगरेट मांगी, मना करने पर घर में घुसकर रात को डंडों से हमला

- वारदात के छह दिन बाद सिटी पुलिस ने केस दर्ज किया

नारनौल। शहर में रात के समय एक मजदूर वापस घर लौट रहा था। महता चौक के पास बाइक सवार दो युवकों ने रोका और सिगरेट मांगी। मना करने पर कहासुनी हो गई। फिर जिस मकान में किरायेदार के तौर पर मजदूर रह रहा था, आरोप है पांच बदमाश वहां डंडे लेकर आए और सोते हुए की जमकर पिटाई की। पड़ोस में रहने वाले लोगों ने किसी तरह से छुड़वाया। अब घटना के छह दिन बाद शनिवार को सिटी पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर आरोपित राहुल व मोनू सहित चार अन्य के खिलाफ केस दर्ज किया है। महता चौक के पास सुबेसिंह के मकान में किराये पर अतुल कुमार रहता है। अतुल कुमार 12 साल से यहां रहकर बर्तन धोने की मजदूरी करता है। 18 मई की रात वह रहिश गार्डन में काम करके वापस घर लौट रहा था। रेलवे अंडरपास के पास एक बाइक पर दो युवक मिले। उन्होंने सिगरेट मांगी। मना कर दिया और वहां से उन्होंने जाते हुए कहा यहां काम नहीं करने देगा व निकलने भी नहीं देगा। वह पुराना बदमाश है। उस पर 307 के मुकदमें है। इसके बाद वह अपने कमरे पर सोया हुआ था। रात करीब ढाई बजे पांच युवक हाथों में डंडा लेकर आए। हाथ पैर पर डंडे मारे। शोर सुनकर पड़ोसी साथी अमरीश व अन्य साथी उठे। बदमाशों ने मोबाइल तोड़ दिए और जान से मारने की धमकी देकर भाग गए। इस वारदात के बाद अमरीश व मकान मालिक को फोन किया। उन्होंने आकर नागरिक अस्पताल में भर्ती करवाया। प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने हायर सेंटर रेफर कर दिया।

उमस भरी गर्मी में नींबू शिकंजी पिला राहगीरों को बुझाई प्यास

नारनौल। गर्मी इन दिनों पूरे यौवन पर है। दोपहरी में जहां घर से बाहर निकलना मुश्किल होता है, वहीं ऐसी स्थिति को भांपते हुए सामाजिक संस्थाएं आगे आ रही है। नारनौल शहर में इन दिनों यह नजारे देखे जा सकते है। ऐसी ही एक संस्था है जिसका नाम माता सती वेलफेयर समिति गहली (नारनौल) है। इस संस्था से जुड़े पदाधिकारी व सदस्यों ने मज दोपहरी में चार घंटे पसीना बहाकर राहगीरों को नींबू की शिकंजी पिलाकर राहत दी। बस स्टैंड व महावीर चौक के बीच सड़क मार्ग मातादीन गली के बाहर टैंट लगा माता सती वेलफेयर समिति ने शनिवार सुबह नींबू की शिकंजी तैयार की। शुरूआत में तीन बड़े ड्रम नींबू शिकंजी तैयार की। गर्मी के मौसम में नींबू शिकंजी शरीर को ऊर्जा प्रदान करती है, वहीं लू से बचाती है। इस पेयजल का सैकड़ों लोगों ने लाभ लिया। देखते ही देखते भीड़ उमड़ पड़ी और आयोजकों को डबल की बजाय ट्रिपल दस ड्रम नींबू शिकंजी बनाने पड़े। सुबह 10 बजे से दोपहर दो बजे तक राहगीरों को यह पेयजल पिलाया गया। राहगीर पिलाने वालों को आशीष दे रहें थे, इससे आयोजकों में ओर एनर्जी आ गई और मज दोपहरी में खूब पसीना बहाकर राहगीरों की सेवा की। माता सती वेलफेयर समिति गहली के अध्यक्ष सिकंदर गहली बताते है कि उम्मीद से कहीं ज्यादा इस पुनित कार्य को करने से मन खुश हुआ। छबील में मौजूद चीनी व नींबू की मात्रा तुरंत ऊर्जा प्रदान करती है। जबकि इसका पानी शरीर को हाइड्रेट रखने और निर्जलीकरण को रोकने में मदद करता है। इस मौके पर संस्था से जुड़े विजयपाल एडवोकेट, संजय यादव, सुशील एडवोकेट, मनीष शर्मा, हरिमोहन पहलवान, विकास नंबरदार, नितिश ठेकेदार, दीपक यादव, कृष्ण यादव, कुलदीप आदि मौजूद थे।

नारनौल। राहगीरों को नींबू शिकंजी पिलाते समित अध्यक्ष सिंकदर गहली व अन्य। फोटो : हरिभूम

एक्वायर से अधिक जमीन पर नहर निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने से किसानों में रोष

नांगल चौधरी। सिंचाई विभाग की ओर से बूढ़वाल गांव में नहर का निर्माण कराने के लिए 11 फीट चौड़ाई में करीब एक किलोमीटर लंबी जमीन एक्वायर की गई थी, लेकिन अब 62 फीट चौड़ाई पर निर्माण की प्रक्रिया आरंभ कर दिया। फालतू जमीन का मुआवजा मांगने पर प्रशासनिक अधिकारी किसानों को केस दर्ज कराने की धमकी दे रहे हैं। जिससे आक्रोशित किसानों ने उच्च न्यायलय में याचिका दायर की है। महेश कुमार, रामेश्वर दयाल, अमर सिंह, निहाल सिंह, किशोरीलाल, रामप्रताप ने बताया कि 1978 में तत्कालीन सरकार ने नोलपुर डिस्ट्रीब्यूटरी का निर्माण कराया था। उस दौरान माइनरों का निर्माण भी स्वीकृत किया गया था। जिसके लिए 11 फीट की चौड़ाई में बूढ़वाल गांव तक जमीन एक्वायर की गई थी, लेकिन अब लगभग 47 साल बाद विभाग ने निर्माण कार्य आरंभ किया है। एक्वायर्ड से अधिक जमीन को मार्क करने पर किसानों ने विरोध जताना आरंभ कर दिया तथा धरने प्रदर्शन का अल्टीमेटम दिया है। इसके बाद विभागीय अधिकारियों ने पुलिस प्रशासन की मदद लेकर नहर का मनमर्जी निर्माण आरंभ कर दिया है। पीड़ित किसानों ने फालतू जमीन का मुआवजा दिलाने के लिए उच्च न्यायलय में केस दायर किया है। अदालत का निर्माण आने तक विभाग से निर्माण कार्य को रोकने की गुहार लगाई थी, लेकिन पुलिस का डर दिखाकर अवैध रूप से नहर बनाने का काम चल रहा है। पीड़ित किसानों ने जिला उपायुक्त से एक्वायर्ड जमीन की पैमाइश करवाकर ही नहर निर्माण कराने की गुहार लगाई है।

जुलाई माह के पहले सप्ताह में शुरू हो सकती है स्नातकोत्तर कोर्स दाखिला प्रक्रिया अभी चल रहीं है स्नातक की परीक्षाएं

3 कॉलेजों को मिले नए पीजी कोर्स, नए सत्र से होंगे दाखिले

- राजकीय महाविद्यालय नारनौल में पीजी में डिजीटल माकेटिंग, राजकीय महाविद्यालय अटेली में एमए अंग्रेजी, राजकीय महाविद्यालय महेंद्रगढ़ में एमएससी कैमेस्ट्री की होगी पढ़ाई शुरू, प्रत्येक कोर्स में होगी 40 सीटे
- जिले के केवल छह कॉलेजों में चल रहे है स्नातकोत्तर कोर्स, स्नातकोत्तर के कोर्स नहीं होने के चलते दूसरे जिले में पढ़ाई करने को मजबूर है विद्यार्थी
- प्रत्येक वर्ष जिला के 120 निजी एवं सरकारी कॉलेज में 16800 सीटों पर विद्यार्थी लेते है स्नातक में दाखिला

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल/महेंद्रगढ़

उच्चतर शिक्षा विभाग ने प्रदेश के 81 कॉलेजों में नए स्नातकोत्तर कोर्स शुरू करने की अनुमति प्रदान की है। इसमें जिला के तीन कॉलेज शामिल है। नए शिक्षा सत्र से राजकीय महाविद्यालय अटेली में एमए अंग्रेजी, राजकीय महाविद्यालय महेंद्रगढ़ में एमएससी कैमेस्ट्रि व राजकीय महाविद्यालय नारनौल में पीजी में डिजीटल माकेटिंग की पढ़ाई शुरू कराई जाएंगी। प्रत्येक कोर्स के लिए 40 सीट निर्धारित की गई है।

बता दें कि अभी कॉलेजों में स्नातक के प्रथम वर्ष की दाखिला प्रक्रिया प्रक्रिया चल रहीं है। वहीं स्नातक कोर्स की परीक्षाएं चल रहीं है। कॉलेजों प्रबंधन की मानें तो जून माह के अंत स्नातक की परीक्षाएं समाप्त होगी। जुलाई माह के पहले सप्ताह में स्नातकोत्तर की दाखिला प्रकिया शुरू हो सकती है। जिला के तीन कॉलेजों में नए कोर्स शुरू होने से विद्यार्थियों को काफी फायदा होगा। इससे पहले विद्यार्थियों को स्नाकोत्तर की पढ़ाई करने के लिए दूसरें जिलों में जिला पड़ता था।

महेंद्रगढ़। राजकीय महाविद्यालय। फोटो : हरिभूमि

अधिकाशं विद्यार्थी स्नाकोत्तर से रह जाते है वंचित: जिले के 14 राजकीय महाविद्यालय में 10 620 स्नातक की सीट निर्धारित है। इसके अलावा 13 निजी कॉलेजों में 6180 सीटें है। प्रति वर्ष जिला से 16800 विद्यार्थी स्नातक कोर्स में दाखिला लेते है। लेकिन अधिकाशं विद्यार्थी सीटों के अभाव में स्नातकोत्तर की पढ़ाई नहीं कर पाते है। जिले के छह कॉलेजों में ही पीजी कोर्स चल रहे है। जिसमें 32 कोर्स की 1334 सीट निर्धारित है। ऐसे में करीब 10 प्रतिशत विद्यार्थी में ही अपने जिले में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर पाते है। अन्य विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के लिए अन्य जिलों में जाना पड़ता हैं। नए शिक्षा सत्र की शुरूआत से पहले कॉलेजों की नए कोर्स की डिमांड भी भेजी जाती है। लेकिन उच्चतर शिक्षा विभाग की ओर से कॉलेजों को नए कोर्स की अनुमति प्रदान नहीं की जाती।

तीन कॉलेजों को मिले है नए कोर्स: राजकीय महाविद्यालय के नोडल अधिकारी प्रो. विजय कुमार ने बताया कि जिला के तीन कॉलेजों को नए पीजी कोर्स मिले है। नए शिक्षा सत्र से राजकीय महाविद्यालय अटेली में एमए अंग्रेजी, राजकीय महाविद्यालय महेंद्रगढ़ में एमएससी कैमेस्ट्रि व राजकीय महाविद्यालय नारनौल में पीजी में डिजिटल मार्केटिंग की पढ़ाई शुरू होगी। प्रत्येक कोर्स में 40 सीट निर्धारित है। जुलाई के पहले सप्ताह में स्नातकोत्तर के दाखिले शुरू हो सकते है।

केवल छह कॉलेजों में चल रहे स्नातकोत्तर कोर्स

राजकीय महाविद्यालय अटेली में नए शिक्षा सत्र से एमए अंग्रेजी की पढ़ाई की जाएगी। वर्तमान में अटेली कॉलेज में 4 कोर्स में 240 सीट निर्धारित है। कॉलेज में एमए अंग्रेजी के अलावा एमए संस्कृत की 60 सीट, एमकॉम की 80 सीट व कंप्यूटर साइंस की 60 सीट है। वहीं राजकीय महाविद्यालय महेंद्रगढ़ में एमए अंग्रेजी में 50 सीट व हिंदी में 50 सीट पर पढ़ाई हो रही है। नए शिक्षा सत्र से 40 सीटों पर एमएससी कैमेस्ट्री में भी पढ़ाई होगी। इसके अलावा राजकीय महाविद्यालय नारनौल में 14 कोर्सो में 510 सीट पर पढ़ाई हो रही है। जिसमें एमए अंग्रेजी में 40, हिंदी में 40, हिस्ट्री में 40, पॉलिटिकल साइंस में 40, संस्कृत में 40, एमकॉम में 40, बोटनी में 20, कैमेस्ट्री में 40, कंम्यूटर साइंस में 40, जूलोजी में 40, गणित में 40, भूविज्ञान में 30, डिप्लोमा इन कंप्यूटर साइंस में 40 सीट निर्धारित है। नए शिक्षा सत्र से डिजिटल मार्केटिंग में 40 सीटों पर भी दाखिले होंगे। राजकीय महाविद्यालय सतनाली में तीन कोर्स में 120 सीट पर पीजी की पढ़ाई हो रही है। इसमें ज्योग्राफी की 40, हिस्ट्री की 40 व कैमेस्ट्री की 40 सीट निर्धारित है। राजकीय महिला महाविद्यालय महेंद्रगढ़ में तीन स्नातकोत्तर कोर्स चल रहे है। जिसमें एमए अंग्रेजी की 40, एमकॉम की 40 व ज्योग्राफी की 40 सीट निर्धारित है। इसके अलावा में 6 कोर्स में 240 सीट निर्धारित है। अंग्रेजी एमए की 40 की सीट, ज्योग्राफी की 40 सीट, हिंदी की 40, पॉलिटिकल साइंस की 40, एमकॉम की 40 व गणित की 40 सीट निर्धारित है।

खबर संक्षेप

सुंदरह में आज होगा ई लाइब्रेरी का शुभारंभ

कनीना। कनीना विकास खंड के गांव सुंदरह में रविवार को ग्रामीण उत्थान भारत निर्माण संगठन की ओर से 14वीं ई लाइब्रेरी कम स्टडी सेंटर का शुभारंभ किया जाएगा। सुबह नौ बजे आयोजित होने वाले इस समारोह के मुख्यातिथि ग्रामीण उत्थान भारत निर्माण के संयोजक मेजर टीसी राव होंगे। उन्होंने बताया कि समारोह में मेधावी विद्यार्थियों को आर्यभट्ट रत्न से सम्मानित किया जाएगा। समारोह की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

खेत से 26 एल्युमिनियम पंप और नोजल चोरी

मंडी अटेली। किसानों द्वारा खेतों में लगाए गए कृषि उपकरणों चोरों के निशाने पर है। फव्वारा नोजल व अन्य कृषि उपकरण चोरी होने की घटनाएं लगातार बढ़ रही है। गोकलपुर के समीप खेत से एक किसान की 26 एल्युमिनियम पंप के साथ एक नोजल व बैंड अज्ञात चोर चुरा कर ले गए। पुलिस में दर्ज शिकायत में बोचड़िया निवासी अत्तर सिंह ने बताया कि उसने रैस्ट एरिया गोकलपुर के नजदीक सैदपुर निवासी मोहर सिंह का ट्यूब वैल ठेके पर ले रखा है। गत 22 मई को रात्रि में ट्यूबवेल से 26 एल्युमिनियम पम्प के साथ एक नोजल व एक बैण्ड चोरी हो गया है। अटेली पुलिस ने किसान की शिकायत पर मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी।

फायर ब्रिगेड की चार गाड़ियों ने पाया आग पर काबू

ओवरटेक करते समय भिड़े ट्रॉला व ट्रक सीएनजी टंकी में लगी आग, बड़ा हादसा टला

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

स्टेट हाईवे 148-बी पर हुडीना गांव से गुजरते वक्त एक ट्रक से दूसरे ट्राले द्वारा अपनी साइड से ओवरटेक करते वक्त अचानक भिड़ंत हो गई, जिससे ओवरटेक कर रहे ट्राले में आग लग गई। यह ट्राला सीएनजी वाला था और सीएनजी की गैस आग पकड़ने से वह तेजी से फैल गई। हालांकि उसमें रोड़ियां भरी हुई था। तेजी से आग लगने पर ग्रामीणों में हड़कंप मच गया, जबकि दुर्घटना होने उपरांत दोनों के ड्राइवर उनको वहीं छोड़ भाग गए।

प्रातः करीब साढ़े नौ बजे एक ट्रक एवं एक ट्राला नारनौल रोड से होते हुए महेंद्रगढ़-दादरी की तरफ जा रहे थे। यह रोड फोरलेन मार्ग है। पीछे चल रहे ट्राले में जहां रोड़ियां भरी हुई थी, वहीं आगे चल रहा ट्रक तिरपाल से ढका हुआ था और उसमें परचून का सामान भरा होना बताया जा रहा है। दोनों ही ट्रक जब हुडीना गांव में क्रॉस कर रहे थे, तभी पीछे चल रहा रोड़ियों वाला ट्राला अपनी ही साइड आगे निकलने के लिए ओवरटेक करने लगा। ओवरटेक करते हुए इस ट्राले की बॉडी का अगला हिस्सा आगे चल रहे ट्रक की अगली बॉडी से टकराकर क्षतिग्रस्त हो गया। रोड़ियों वाले ट्राले में सीएनजी के तीन गैस सिलेंडर लगे हुए थे। अचानक दुर्घटना होने पर यह ट्राला आग पकड़ गया। आग गैस लिकेज होने से तेजी से फैलने लगी, जिस ट्राला चालक ने उसे सड़क से नीचे उतार दिया और ट्राला को वहीं छोड़ कहीं भाग गया। दूसरे ट्रक वाले ने भी ट्रक को वहीं छोड़ दिया और वह भी भाग खड़ा हुआ। आग धधकती देख ग्रामीणों में भी हड़कंप मच गया। सीएनजी लीक होने के कारण आग तेजी से धधकने लगी थी तथा काले धुएं का गुब्बार आसमान में उड़ने लगा था। इसे देख ग्रामीण घटनास्थल की तरफ दौड़ पड़े और उन्होंने ट्यूबवेल की मोटर चलाकर उसे बुझाने का प्रयास किया, लेकिन गैस होने के कारण उस पर काबू नहीं पाया जा सका। यह आग शीघ्र ही फैल गई तथा सड़क किनारे पड़े ईंधन में भी लग गई। इतना ही नहीं, तब मौके पर कुछ ही दूरी पर दीवान बनवारी लाल का एक तेल से भरा हुआ टैंकर भी खड़ा था, जिसके अगले हिस्से ने आग पकड़ ली, लेकिन तब तक फायर ब्रिगेड की गाड़ी पहुंच चुकी थी और इस ट्रक की आग को शीघ्रता से बुझा दिया गया। लेकिन पहले वाले ट्राले में गैस की आग लगी होने के कारण उस पर काबू नहीं पाया जा सका। इस कारण महेंद्रगढ़ एवं अटेली से भी फायर ब्रिगेड की गाड़ियों को बुलाना पड़ा। फायर ब्रिगेड की चार गाड़ियों के आने के पश्चात ही आग पर पूर्ण रूप से काबू पाया जा सका, लेकिन तब तक जिस ट्राले ने शुरू में आग पकड़ी थी, उसमें काफी नुकसान हो गया, क्योंकि उसकी आग टायरों तक फैल गई थी। आग पर फॉग चलाकर काबू पाया गया और लगभग एक-डेढ़ घंटे तक फायर कर्मी आग बुझाने के लिए कड़ी मशक्कत कर रहे। हालांकि सौभाग्य की बात यह रही कि इस दुर्घटना में कोई हताहत नहीं हुआ। बाद में पुलिस भी मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू की तथा सड़क पर बनी जाम की स्थिति को भी खुलवाया।

नारनौल। हुडीना गांव में आग लगा ट्राला व आग बुझाते फायर कर्मी। फोटो : हरिभूमि

नारनौल। क्षतिग्रस्त ट्रक। फोटो : हरिभूमि

महेंद्रगढ़। विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

बीआर स्कूल में छात्रों ने विज्ञान में दिखाई अद्भुत प्रतिभा

महेंद्रगढ़। बीआर स्कूल सेहलंग में विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा छठीं से नौवीं तक के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि चेयरमैन हरीश भारद्वाज व विशिष्ठ अतिथि ज्योति भारद्वाज रहीं। छात्रों को चार प्रतिस्पर्धी सदनों में विभाजित किया गया था, जिनमें भारत हाउस, हिंदुस्तान हाउस, आर्यावर्त हाउस और इंडिया हाउस शामिल थे। पहले जनरल साइंस क्वेश्चन राउंड में प्रतिभागियों से विज्ञान के विभिन्न विषयों से संबंधित सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गए, जिसने उनकी मूलभूत समझ का आकलन किया। दूसरे रैपिड फायर राउंड में गति और सटीकता का परीक्षण था, जहां टीमों को कम समय में अधिक से अधिक प्रश्नों के उत्तर देने थे। इस महत्वपूर्ण प्रतियोगिता में दिनेश कुमार ने निर्णायक की भूमिका निभाई, जबकि आरती यादव ने मंच संचालन किया।

महेंद्रगढ़। बच्चों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

देवयानी स्कूल का परीक्षा परिणाम रहा शानदार

महेंद्रगढ़। देवयानी इंटरनेशनल स्कूल बेवल के विद्यार्थियों ने सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में परिणाम में शत-प्रतिशत सफलता हासिल की हैं। कक्षा पांचवी से हर्ष पुत्र राजेश ने 232 अंक, पीयूष पुत्र विजयपाल ने 229 अंक, नव्या पुत्री राजकुमार ने 229 अंक, कार्तिक पुत्र राजकुमार ने 225, मनीष पुत्र सुनील कुमार ने 205 अंक, ललित पुत्र सतीश कुमार ने 205 अंक प्राप्त किए। दीपेश धतरवाल, मयंक यादव, केशव राजपूत, आलोक यादव, लक्की यादव, अंकुर वर्णिका, रिया राव, जतिन यादव, कालपी चौधरी, हर्ष यादव आदि बच्चों ने बेहतरीन अंक के साथ क्वालीफाई कर अपने माता-पिता और स्कूल का नाम रोशन किया। प्राचार्य बलवान सिंह ने बताया कि कुछ बच्चे शुरू से ही कॉम्पिटेटिव दिमाग के होते हैं, यदि उन्हें शुरू से अभ्यास करवाए जाए तो वे भविष्य में एकेडमिक में बड़ी उपलब्धि हासिल कर सकते हैं।

महेंद्रगढ़। उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थियों को स्वागत करते। फोटो : हरिभूमि

श्रीकृष्णा ग्रुप के 56 विद्यार्थी सैनिक स्कूल परीक्षा में क्वालीफाई

महेंद्रगढ। श्रीकृष्णा ग्रुप आफ में एनटीए द्वारा आयोजित सैनिक स्कूल परीक्षा में 56 विद्यार्थियों को क्वालीफाई करने पर एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यातिथि डॉ. बीरसिंह यादव, विशिष्ट अतिथि सीईओ कर्मवीर राव व प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा की गई। पीआरओ सुधीर यादव ने बताया कि श्रीकृष्णा ग्रुप के 56 विद्यार्थियों ने भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में क्लाईफाई किया है। सैनिक स्कूल परीक्षा बीते माह रेवाड़ी में आयोजित में की गई थी। जिसमें श्रीकृष्णा स्कूल का छात्र शुभम पुत्र देवेंद्र ने 400 में से 342 अंक प्राप्त किए तथा पंकज पुत्र कुलदीप, सुमित पुत्र देवेंद्र, दक्षिणा पुत्री सुकर्म पाल, धारा पुत्री शेरपाल, निखिल दिनेश, साक्षी पुत्री रवि प्रकाश, नैतिक पुत्र रणधीर, आशीष पुत्र बेगराज, आशा पुत्री हनुमान, वंशिका पुत्री बाबूलाल, विक्की पुत्र सुरेंद्र, नैंसी पुत्री हितेंद्र, शिवम पुत्र हरज्ञान, अनुष्का पुत्री सनोज व अंशु पुत्र मैनपाल ने कक्षा नौवीं के लिए क्वालीफाई किया। कक्षा नौवीं क लिए 20 विद्यार्थियों में से 16 विद्यार्थियों ने क्वालीफाई किया। वहीं कक्षा छठी के लिए सक्षम पुत्र ईश्वर यादव, केशव पुत्र रमेश कुमार, मंशु पुत्र बाबूलाल, हर्षित पुत्र मनोज, हावेन पुत्र संजीव, प्रिंस पुत्र अंकुश, लक्ष्य पुत्र रविंद्र, हर्षित पुत्र सुरेंद्र, सक्षम पुत्र सतीश कुमार, प्रतीक पुत्र संजीव सहित अन्य विद्यार्थियों ने सैनिक स्कूल परीक्षा क्वालीफाई किया है। कक्षा छठी के लिए 35 विद्यार्थियों में से 15 विद्यार्थियों ने क्वालीफाई किया। सम्मान समारोह में उपलब्धि हासिल करने वाले विद्यार्थियों को सीईओ कर्मवीर राव व प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा पुरस्कृत किया गया। वहीं श्रीकृष्णा स्कूल सीहमा में 35 विद्यार्थियों में से 25 विद्यार्थियों ने क्वालीफाई किया।

राजवंशी स्कूल के 13 छात्र सैनिक स्कूल में चयनित

नारनौल। राजवंशी स्कूल दौचाना के 13 विद्यार्थियों ने सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की है। प्राचार्य दिनेश कुमार ने जानकारी देते हुए बताया की राजवंशी स्कूल से 15 छात्रों ने इस प्रवेश परीक्षा में भाग लिया था। जिसमें 13 छात्रों ने इस परीक्षा को उत्तीर्ण कर लिया है, जो कि इस क्षेत्र में सबसे अधिक है। उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष भी 12 विद्यार्थियों ने सैनिक व आठ विद्यार्थियों ने नवोदय परीक्षा उत्तीर्ण की थी। प्राचार्य ने कहा कि राजवंशी विद्यालय ने अब तक कुल 52 विद्यार्थी सैनिक स्कूल में उत्तीर्ण कराए हैं, जोकि यह करने वाला क्षेत्र का पहला स्कूल है। उत्तीर्ण छात्रों में आयुष, लक्ष्य, कुनाल, नवनीत, पायल, दीपांशु, अमन, लक्ष्य, भविष्य, आदित्य, लक्षित, मुकुल व कन्हैया शामिल हैं।

महेंद्रगढ़। प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

यदुवंशी स्कूल में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित

महेंद्रगढ़। यदुवंशी स्कूल में एक रोचक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था मोबाइल का उपयोग लाभ या हानि। इस कार्यक्रम में छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों में तार्किक क्षमता और सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्ति की कला को बढ़ावा देना था। कुछ छात्रों ने मोबाइल को ज्ञान का स्त्रोत, आनलाइन शिक्षा का माध्यम और वैश्विक जुड़ाव का जरिया बताते हुए इसके पक्ष में तर्क दिए। वहीं अन्य छात्रों ने इसके दुष्प्रभाव जैसे आंखों की रोशनी पर प्रभाव, सोशल मीडिया की लत और साइबर अपराधों की बढ़ती घटनाओं को उजागर किया। प्राचार्य पवन कुमार ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिता छात्रों को सोचने, समझने और समाज के विभिन्न पहलुओं पर अपने दृष्टिकोण स्पष्ट करने का अवसर देती हैं। ग्रुप चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि मोबाइल न तो पूर्ण रूप से वरदान है, न ही अभिशाप। यह हमारी सोच और उपयोग पर निर्भर करता है। हमें इसका समझदारी से इस्तेमाल करना चाहिए।

कनीना। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

आरआरसीएम के विद्यार्थियों ने सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में लहराया परचम

कनीना। आरआरसीएम पब्लिक स्कूल कनीना के विद्यार्थियों ने सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया। विद्यालय के कई विद्यार्थियों ने इस प्रतिष्ठित परीक्षा में क्वालीफाई कर न केवल अपने माता-पिता और गुरुजनों, बल्कि पूरे कनीना क्षेत्र का नाम रोशन किया है। गौरतलब है कि कक्षा छठी के लिए सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में आरआरसीएम शिक्षण संस्थान समूह के ध्वज पुत्र मनोज कुमार ने 243 अंक, आदित्य पुत्र परमजीत ने 226 तथा वंशिका पुत्री अनिल कुमार ने 226 अंक प्राप्त किए व यतिन पुत्र सत्यवीर ने 220 अंक प्राप्त किए। इसके आलावा भूमिका, रक्षिता, पारुल, योगिता, मयंक, अर्चित, यश, प्रदीप, मोक्ष, राघव, कुणाल, प्रीतहर्ष, तन्नु, आरव, यश, आरुशी व अंजली ने भी सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त की। वहीं कक्षा नौवीं के लिए सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में सतेंद्र पुत्र सुनील ने 236 अंक व प्रत्यूष पुत्र रामबीर ने 30 अंक प्राप्त किए। छात्रा किया, मनस्वी व चाहत ने भी सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त की। आरआरसीएम समूह चेयरमैन व निदेशक विपुल राव ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व का क्षण है कि हमारे बच्चे देश सेवा के लिए तैयार होने वाले संस्थानों में प्रवेश पा रहे हैं।

हेरिटेज स्कूल के 28 विद्यार्थियों का सैनिक स्कूल में चयन

नारनौल। उपमंडल कनीना में स्थित हेरिटेज वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मोहनपुर के 28 विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त कर अपनी प्रतिभा दिखाई। जिसमें दुर्गा, जितिन, लकी यादव, इशिका, हरिशंकर, साहिल, राहुल, प्रियांशु, मिस्टी, मयंक कुमार, लक्ष्य, अयान, दीपक यादव, देवराज, देव, ध्रुव, दीक्षा यादव, दीपेंद्र कुमार, इशिका शर्मा, गौरव शर्मा, अवनी, एंजेल, हर्ष कुमार, आयुषी अहरोदिया, आयुष कौशिक, इशू, पारस व मानवी ने सफलता पाकर अपने विद्यालय व अध्यापक, माता पिता का नाम रोशन किया है। विद्यालय के अध्यक्ष ओमप्रकाश शर्मा ने बच्चों को उनके उत्कृष्ट परिणाम की बधाई दी। इस अवसर पर विद्यालय में खुशी का माहौल बना हुआ है। सभी विद्यार्थी एक दूसरे को मिठाई खिलाकर वह बधाइयां देते हुए डांस किया। इस मौके पर विद्यालय के सीईओ कैलाश शर्मा, मनीष कुमार, डायरेक्टर खुशीराम शर्मा, प्रधानाचार्य कृष्ण सिंह, सीनियर कोऑर्डिनेटर सुरेंद्र कुमार, कोऑर्डिनेटर सुमन मैम आदि मौजूद थे।

सिल्वर जोन इंटरनेशनल ओलंपियाड में आरपीएस के छात्रों ने प्रथम इंटरनेशनल रैंक प्राप्त की

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

सिल्वर जोन इंटरनेशनल ओलंपियाड में आरपीएस के चार विद्यार्थी जयश्री, हिमांशी, भव्या तथा पीहू ने 100 प्रतिशत स्कोर कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परचम लहराकर गोल्ड मेडल प्राप्त किया हैं। विद्यालय के 45 विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगी परीक्षा में सफलता पाई है। सभी चयनित विद्यार्थियों को आरपीएस ग्रुप चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, सीईओ इंजी. मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुनाल राव, प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि सिल्वर जोन इंटरनेशनल ओलंपियाड में विद्यालय के चार विद्यार्थी द्वारा शत-प्रतिशत अंक लेकर प्रथम रैंक प्राप्त करना विद्यालय के साथ-साथ जिले व प्रदेश के लिए भी एक बड़ी उपलब्धि है। आरपीएस के विद्यार्थी आज प्रदेश व देश का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संस्कार व गुणवत्ता युक्त शिक्षा ही आरपीएस की पहचान है।

महेंद्रगढ़। बच्चों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सिल्वर जोन इंटरनेशनल के अंग्रेजी विषय में नवीश यादव, अनिमेष, अंकित कुमार, प्रियांशी यादव, वेदांशी, आरव कौशिक, रक्षा, दिव्या, खुशी यादव, प्रिया, साक्षी तथा मैथ ओलंपियाड में इशू, आरव, अंकित कुमार, आरव, यश, यश कुमार आरव कौशिक, मुकुल यादव, नैतिक, जय श्री, रक्षित, ज्योति, मानवी, हिमांशी, जियान, भव्या तथा साइंस ओलंपियाड में नवीश यादव, सक्षम आर्य, देवांश, आरव कौशिक, मुकुल यादव, आयुष सांगवान, जयश्री, अश्विन, हिमांशी, जिया, भव्या, पीहू, यशवर्धन राजपूत, दर्श, हर्ष, सैंटी, वंशिका सिंह सहित 45 बच्चों ने सफलता प्राप्त की है। सभी चयनित विद्यार्थियों को आरपीएस के उप प्राचार्य दिनेश कुमार, डीन एलएन गौड़, पवन तिवारी, विंग हैड देवेंद्र पूनिया, जिले सिंह, अमित कुमार, साक्षी मलिक, अनीता अहलावत सहित समस्त स्टाफ सदस्यों ने बधाई दी।

टेलीग्राम टास्क फ्रॉड में संलिप्त दो और आरोपी गिरफ्तार

- टेलीग्राम पर ऑनलाइन टास्क का झांसा देकर दिया था ठगी की वारदात को अंजाम

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

टेलीग्राम टास्क फ्रॉड के मामले में कार्रवाई करते हुए साइबर थाना पुलिस ने दो और आरोपितों को गिरफ्तार किया है। आरोपित ठगी की वारदात को अंजाम देने में संलिप्त थे। इस मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने दो आरोपितों पवन वासी हंसासर थाना रतनगढ़ जिला चूरू राजस्थान, शंकरलाल वासी जेगणिया बिकान थाना राजलदेसर जिला चूरू राजस्थान को गिरफ्तार किया है। आरोपितों से पुलिस ने दो फोन और पासबुक बरामद की हैं। आरोपितों को न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

नारनौल। पुलिस गिरफ्त में आरोपित। फोटो : हरिभूमि

इस मामले में पुलिस की ओर से छह आरोपितों युवराज वासी पिड़वा जिला डीडवाना कुचामन हाल मेला मैदान डीडवाना, केदारमल वासी ललासरी जिला डीडवाना कुचामन हाल गणेश नगर कुचामन सिटी, रामदेव वासी ओडिट जिला नागौर राजस्थान, नवीन वासी सारडी जिला डीडवाना कुचामन, रमेश वासी पिड़वा जिला डीडवाना कुचामन व रवि वासी कुचामन सिटी जिला डीडवाना कुचामन को पहले गिरफ्तार किया था। पुलिस ने आरोपितों से सात मोबाइल विद सिम कार्ड, एक लैपटॉप, पांच एटीएम कार्ड, चार सिम कार्ड और अन्य कागजात बरामद किए थे। गांव ककराला निवासी महिला ने शिकायत में बताया कि वह गर्वनमैन्ट टीचर व वर्तमान मे गांव खरखड़ा बास महेन्द्रगढ मु तैनात है। पीड़ित ने बताया कि 31 जनवरी 2024 को उसके मोबाइल नम्बर पर एक अंजान मोबाइल नम्बर से वाट्सअप पर मैसेज आया। जिसमें उसे ऑनलाइन घर बैठे जॉब करने के लिए सलाह दी। इसके बाद उन्होंने उसके वाट्सअप नम्बर पर लिंक भेजकर टास्क दिया और स्टार देने के लिए कहा। शिकायतकर्ता ने उस लिंक पर क्लिक करके उनके कहे अनुसार स्टार दिए, इसके बाद उन्होंने टेलीग्राम ज्वाइन करने के लिए कहा। साइबर ठगों ने टेलीग्राम पर ग्रुप ज्वाइन करवाकर टेलीग्राम पर टास्क पूरे करने के लिए कहा और टास्क पूरे करने पर प्रॉफिट मिलने का लालच देकर उससे 60000 रुपये ठग लिए। पुलिस ने शिकायत के आधार पर संबंधित कंपनियों से पत्राचार कर आरोपितों का पता लगाया। आरोपितों का पता लगाकर पुलिस ने उन्हें राजस्थान क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया।

सार्वजनिक सूचना

मै चेतन प्रकाश पुत्र पूर्णचंद वासी मोहल्ला खडखडी नारनौल तहसील नारनौल जिला महेंद्रगढ हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुत्र दीपक बंसल व उसकी पत्नी हिमांशी गुप्ता मेरे कहने सुनने से बाहर है और आए दिन घर में झगडा करते रहते है। इसलिए मै उनको अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में इनसे लेनदेन करने वाला स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरी व मेरे बाकि परिवार की कोई जिम्मदारी नहीं होगी।

सार्वजनिक सूचना

मैं नितेश कुमार पुत्र श्री नवरंग लाल सैनी वासी पुरानी सराय नजदीक पुरानी कचेहरी नारनौल जिला महेंद्रगढ हरियाणा बयान करता हूं कि मैने अपनी पुत्री का नाम भविष्य के सभी कामों के लिए दीया से बदलकर इयाना कर लिया है। आगे से उसे इयाना के नाम से जाना पहचाना जाए।

A Fast growing co-educational Christian Minority Institution
MATA MARIAM
JAN SEVA VIDYALAYA
(Under the Aegis of Delhi Catholic Archdiocese)
Class XII SCIENCE COMMERCE
97.0% NANDINI
96.4% AKSHITA
93.2% DEEPANSHU
91.8% YUVRAJ
90.6% MUSKAN
M.M. JAN SEVA VIDYALAYA
SOLIDARITY OF ALL RELIGIONS
NARNAUL - HARYANA
ESTD. 1992
Congratulations
Luminaries
2024-25
Class X
97.6% ANJALI
96.2% ANSHU
95.6% RAJAT
95.2% AAYUSH
95.0% NAITIK
94.0% TANISHA
93.2% CHETANYA
93.2% AAYUSH
93.2% ANUSHKA
93.0% ANSHUL
92.6% KARTIK
91.0% KHYATI
90.8% VIBHOR
90.2% JANVI
90.0% JIYA
HIGH MERIT PERFORMERS ACROSS SUBJECTS (100% - 90%)
CLASS XII
RESULT
SCIENCE & COMMERCE
BHUMI
CHIRAG SHARMA
DIVYANSHI SIROHIWAL
GARIMA
KHUSHI
KOMAL
MEHUL YADAV
NAMAH GARG
NAVNEET
PARAG
PARAS
RITIKA YADAV
ROHIT YADAV
TEZAL
YASH
LAVEENA
DIVYA BHARDWAJ
AARYAN SINGH
TITIKSHA SHARMA
VINAY KUMAR
KRISH
LAKSHAY
Under the outstanding leadership of Fr. John M. Fernandes sfx as a Principal in his 2nd Term
PRINCIPAL
FR. JOHN M. FERNANDES
CLASS X
RESULT
VARSHA SAINI
TANI AGGARWAL
SANIYA
SAKSHI
RIYA YADAV
RAGHAV GARG
PARTH SHARMA
PURVI YADAV
MONIKA
NUPUR
MANISHA
MAYANK CHAUHAN
MAAHI
KOVID MEHTA
HARSHIT
JATIN
GODSON KUJUR
DUPESH
DHAIRYA YADAV
DEVESH
DEVEN MEHTA
DEV TAYAL
DEEPAK
CHAHAK VERMA
ARMAAN YADAV
ANSHU
AEKAMJOT SINGH
ADITYA
MAHENDERGARH ROAD, NASIBPUR, NARNAUL
CONTACT : 01282 - 260211, 9050269525
Email : matamariamjansevavidyalaya@gmail.com
Website : www.mmjsvnnl.com

भविष्य की दुनिया बदल देगी जेनेटिक इंजीनियरिंग

यह सही है कि आज के दौर में लगभग हर क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई का प्रभाव बढ़ रहा है। लेकिन इसके अलावा एक और वैज्ञानिक तकनीक ऐसी है, जो भविष्य में दुनिया को बदलने की क्षमता रखती है, वो है-जेनेटिक इंजीनियरिंग। इसकी क्षमताओं, इससे उपजने वाली संभावनाओं और सामने आने वाले संकटों पर एक नजर।

कवर स्टोरी
संजय श्रीवास्तव

आजकल हर कहीं सबसे ज्यादा चर्चा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक की ही होती है। लेकिन इससे होने वाले फायदों के साथ ही इससे हो सकने वाले नुकसान के बारे में भी लोग कई तरह की आशंकाएं व्यक्त करते हैं। सिर्फ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर ही वैज्ञानिक चिंताएं नहीं हैं, जेनेटिक इंजीनियरिंग को लेकर भी कई विशेषज्ञ चिंतित हैं और इसे खतरनाक दोधारी तलवार मान रहे हैं। इनके मुताबिक इसके कुछ बहुत लाभकारी पहलू हैं, लेकिन कुछ गंभीर खतरे और नैतिक प्रश्न भी इससे जुड़े हैं, जो लगातार डरावने हो रहे हैं।

कई वैज्ञानिकों ने जताई चिंता

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के जेनेटिकिस्ट और सिंथेटिक बायोलॉजी के अग्रणी जॉर्ज चर्च कहते हैं, 'माना कि जेनेटिक इंजीनियरिंग में भारी संभावनाएं हैं, लेकिन इसके बायोटेररिज्म जैसे दुरुपयोग से भी इनकार नहीं किया जा सकता।' चर्च तो यहां तक कहते हैं कि अगर यह तकनीक गलत हाथों में पड़ गई, तो यह महामारी और जैविक युद्ध का कारण बन सकती है। आनुवंशिकीय या जेनेटिक इंजीनियरिंग के निजी नियंत्रण में जाने से कई तरह के खतरे पैदा हो सकते हैं। महान भौतिकविद स्वर्गीय स्टीफन हाकिंग कहा करते थे कि अगर जेनेटिक इंजीनियरिंग का दुरुपयोग हुआ तो कुछ 'सुपरह्यूमन' लोग खुद को बाकी मानव जाति से श्रेष्ठ बना सकते हैं। उन्होंने कहा था कि जीन एडिटिंग के कारण भविष्य में कोई नस्ल 'जेनेटिकली मोडीफाइड एलीट' बन सकती है, जो बाकी पर हावी हो सकती है।

मिसयूज में जुटे हैं कई वैज्ञानिक

अगले एक दशक के भीतर ही इस प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग के असर का आकलन किया जा रहा है। यह अलग बात है कि वैज्ञानिक इसकी काट में लगे हुए हैं। गुणसूत्रों या जीन में हेर-फेर करके कैंसर और कुछ दूसरी लाइलाज बीमारियों से निजात पाने का रास्ता तलाशने की वर्तमान प्रकिया निकट भविष्य में संसार के कई देशों को और फिर समूचे संसार को अगले एक दशक के भीतर ही खतरनाक मोड़ पर लाकर खड़ा कर सकती है। हालिया शोध और विकास की पड़ताल से पता चलता है कि इस दिशा में हो रही सकारात्मक प्रगति के साथ-साथ कुछ नकारात्मकक ताकतें भी सक्रिय हैं, वे इस तकनीक का दुरुपयोग कर सकती हैं। अमेरिका और ब्रिटेन, जहां आनुवंशिकी और जीन संपादन या कहें जेनेटिक इंजीनियरिंग पर गहन काम हो रहा है, वहां के वैज्ञानिक अब खुलेआम यह कहने लगे हैं कि कुछ वैज्ञानिक निहित स्वार्थों के तहत तो कुछ स्वार्थी देशों के चंगुल में फंसकर जेनेटिक इंजीनियरिंग की तकनीक के साथ ऐसे प्रयोग में लगे हैं, जिसके नतीजे घातक हो सकते हैं। विज्ञान की नैतिकता और देश के कानून के दायरे से बाहर जाकर काम कर रहे ये वैज्ञानिक आने वाले एक दशक में मानवता के लिए बेहद भयावह समस्या खड़ी कर सकते हैं। अमेरिकन एसोसिएशन फॉर एडवांसमेंट ऑफ साइंस की यह चिंता वाजिब है कि यह न सिर्फ आनुवंशिकी और चिकित्सा के क्षेत्र के लिए बहुत नुकसानदेह है वरन, संपूर्ण मानवता को संकट में डालने वाला है। इसलिए जीन एडिटिंग से संबंधित कार्यों को सरकार के कठोर नियंत्रण में होना चाहिए।

पनप सकते हैं खतरनाक रोग

जेनेटिक अभियांत्रिकी फिलहाल एक खुला क्षेत्र है। इस पर सरकारी नियंत्रण बहुत कम है। इधर इस क्षेत्र के तीव्र विकास में निजी क्षेत्र का भी बहुत योगदान सामने आया है। ऐसे में कुछ कॉरपोरेट के खरीदे हुए वैज्ञानिकों ने तरह-तरह के पेटेंट करवाकर इसे अरबों डॉलर का व्यवसाय बना दिया है। कमजोर नियंत्रण और इस तरह के विकास और बाजार के प्रवेश ने इसे भविष्य के वैश्विक संकट बनने की सहूलियतें प्रदान कर दी हैं। इसलिए भविष्य में जीन इंजीनियरिंग खतरा बन सकती है। आशंका इस बात की है कि रोगों से लड़ने की जैव तकनीक ढूंढने वाले चिकित्सकों की शोध का सहारा ले ये वैज्ञानिक नए रोगों का इजाद कर दवा व्यापार का नया रास्ता निकालने का काम न शुरू कर दें। ऐसे में असाध्य रोगों के कम होने की बजाय नए और घातक रोग बढ़ सकते हैं, जिनका इलाज ढूंढ़ना पहले से भी जटिल और मुश्किल साबित हो सकता है। ब्यूबॉनिक प्लेग खतरनाक है पर आज उसका इलाज मौजूद है। अब अगर इस रोग के जीवाणुओं की जेनेटिक इंजीनियरिंग कर दी जाए तो यह जनसंहार का ऐसा हथियार बन जाएगा, जिसका काट तुरंत मिलना तो नामुमकिन ही होगा।

दुनिया को होना होगा सचेत

कॉरपोरेट और बाजार के हाथों में जाकर जेनेटिक इंजीनियरिंग की तकनीक व्यापक जनसंहार के हथियारों में बढ़ोतरी कर सकता है और जैविक आतंकवाद का नया खतरा खड़ा हो सकता है। कुछ देश इस तरह के वैज्ञानिकों की प्रयोगशाला बन सकते हैं और भविष्य में तमाम दूसरे देशों के साथ-साथ इसके शुरुआती शिकार भी। बहरहाल, इस प्रौद्योगिकी का समाज के नियंत्रण से बाहर होना भविष्य में भयानक परिणाम ला सकता है। ऐसे में पूरी दुनिया को इस दिशा में सचेत रहना होगा। *

असाध्य रोगों का इलाज होगा संभव

यह सही है कि जीन इंजीनियरिंग के क्षेत्र में बीते कुछ बरसों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इसके बहुत से फायदे भी हमें मिलने लगे हैं या मिलने वाले हैं। मसलन, इस नई तकनीक का सहारा लेकर आज वैज्ञानिक पहले से बहुत ज्यादा आसानी से, कम समय में और बेहद सटीक तरीके से गुणसूत्रों का कुशल संपादन कर सकते हैं। जेनेटिक इंजीनियरिंग के जरिए निकट भविष्य में ही सिस्टिक फाइब्रोसिस या कई तरह के कैंसर का इलाज बेहद सरल हो जाने वाला है। इस तकनीक में स्मृतिभ्रंश या अलजाइमर, एचआईवी और ब्लड कैंसर या बीटा थैलेसेमिया जैसे रोगों से निजात दिलाने की खूबी है। इससे ऐसे बैक्टीरिया बनाए जा रहे हैं, जो वातावरण से कार्बन डाईऑक्साइड सोखकर ग्लोबल वार्मिंग से मुक्ति दिलाएंगे, साथ ही ये बतौर ईंधन भी इस्तेमाल होंगे और इनसे रोगों को दूर करने वाले टीके भी बनाए जाएंगे। इस तकनीक से मानव शरीर के खराब अंगों को जानवरों के अंगों से बदला जा सकेगा और अंग प्रत्यारोपण के लिए सही अंगों का निर्माण निजी प्रयोगशालाओं में हो सकेगा। निजी कंपनियां करीब 40 फीसदी मानव अंगों को पेटेंट करा भी चुकी हैं। जिस तरह कॉरपोरेट इस क्षेत्र में निवेश को उतावला है, उसे देखते हुए शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र में हर कदम पर खतरा सूंघकर आगे बढ़ना होगा ताकि उनके प्रायोगिक निष्कर्षों और प्रक्रियाओं का गलत लाभ ऐसे वैज्ञानिक न उठा सकें, जिनके संबंध स्वार्थी देशों या संगठनों से जुड़े हैं।

संभव होंगे डिजाइनर बेबी

जेनेटिक अभियांत्रिकी तकनीक के तहत गुणसूत्रों में हेर-फेर करके मनचाहे शिशु यानी डिजायनर बेबी की सुविधा आसानी से उपलब्ध होने के चलते भविष्य में बहुत से लोग अपने बच्चे को बेहतर और सुरक्षित बनाना चाहेंगे। लेकिन जेनेटिक इंजीनियरिंग से बच्चे की लंबाई, आंखों का रंग और बहुत से शारीरिक बदलाव के साथ उसे कई अनुवांशिक बीमारियों से मुक्त तो किया जा सकता है पर इस बात की भी पूरी गारंटी है कि वह बच्चा कुछ नई बीमारियों और संक्रमण के प्रति अपनी प्रतिरोधक क्षमता ही खो सकता है।

डेवलपमेंट
प्रमोद भार्गव

तकनीक के विकास ने ट्रेडिशनल वॉर के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। भविष्य के युद्धों में रोबोट और मानव रहित हथियार ज्यादा उपयोग में लाए जाएंगे। इसी के मद्देनजर डी.आर.डी.ओ. सेना के लिए फाइटर रोबोट्स बना रहा है।

सेना में शामिल होंगे ह्यूमनॉइड फाइटर रोबोट

भारत के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के वैज्ञानिक एक ऐसे मानव सदृश्य अर्थात ह्यूमनॉइड रोबोट के विकास पर काम कर रहे हैं, जो सैन्य अभियानों में मानव सैनिकों के सहयोगी का काम करेंगे और स्वयं भी युद्ध में भागीदार रहेंगे। इन रोबोट का निर्माण दुर्गम क्षेत्रों में लड़ने के उद्देश्य से किया जा रहा है, जिससे मानव सैनिकों को जान का जोखिम कम हो।

तेजी से हो रहा कामः डीआरडीओ की प्रमुख प्रयोगशाला रिसर्च एंड डेवलपमेंट स्टेब्लिशमेंट (इंजीनियर्स) इस ह्यूमनॉइड रोबोट को विकसित करने में लगी है। चार साल से इस परियोजना पर काम चल रहा है। इस मानव रोबोट के ऊपरी और निचले शरीर के भाग पृथक-पृथक मानव रूपों में तैयार किए जा रहे हैं। इन पर किए परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि यह प्रयोग सफलता की ओर बढ़ रहा है। पुणे में आयोजित नेशनल वर्कशॉप ऑन एडवांस लेग्ड रोबोटिक्स में इस रोबोट को प्रदर्शित भी किया गया। इस कार्य को आगे बढ़ाने में सेंटर फॉर सिस्टम एंड टेक्नोलॉजी और एडवांस रोबोटिक्स की मदद भी ली जा रही है। हाल में हुए ऑपरेशन सिंदूर के बाद इस अभियान में तेजी आ गई है।

सेना बना रही योजनाः भारत सरकार इस कोशिश में है कि तीनों सेनाओं में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी से निर्मित रोबोटिक हथियारों की संख्या बढ़ाई जाए। इस नाते एक महत्वाकांक्षी रक्षा परियोजना की शुरुआत की गई है। इस परियोजना का उद्देश्य मानव रहित टैंक, जलपोत, हवाईयानों, स्वचालित राइफल और रोबो आर्मी बनाए जाने की तैयारी है। यह परियोजना जब क्रियान्वित हो जाएगी, तब भारत की थल, जल और वायु सेनाएं युद्ध लड़ने के लिए नई तकनीक से सक्षम हो जाएंगी। टाटा संस के प्रमुख एन चंद्रशेखर की अध्यक्षता वाला एक उच्च स्तरीय समूह इस परियोजना को अंतिम रूप दे रहा है।

दुश्मनों से लड़ना होगा आसानः सेना को बदलते परिवेश की जरूरतों के अनुसार ढालना जरूरी है, क्योंकि पाकिस्तान और चीन की सीमा पर दृश्य दुश्मनों से कहीं ज्यादा अदृश्य दुश्मनों की चुनौती पिछले तीन दशक से पेश आ रही है। इस कड़ी में अब भारतीय रोबो सेना जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों से लड़ने के लिए उतारने की तैयारी की जा रही है। ये रोबोट आतंकियों के गुप्त ठिकानों में दृश्य और अदृश्य शक्ति के रूप में उतर कर उनकी मौजूदगी की सटीक जानकारी तो देंगे ही, अलबत्ता उन्हें पलों में तबाह भी कर देंगे। ये रोबोट सेना की आतंकरोधी इकाई और सुरक्षा बलों के लिए सुरक्षा कवच सिद्ध होंगे। इनकी सीमा पर उपलब्धता के साथ ही सेना को पूरी तरह हाईटेक बना दिया जाएगा। दुश्मन की घुसपैठ और पाकिस्तानी सेना के हमलों को नाकाम करने में भी यह रोबोट सेना फलदायी सिद्ध होगी।

कई कार्यों में होंगे सक्षमः रक्षा मंत्रालय ने पहले चरण में 550 रोबोटिक्स सर्विलांस यूनिट खरीद रहा है। इनकी खेप मिलते ही इन्हें सेना के सुपुर्द कर दिया जाएगा। ये आर्मी-रोबो किसी भी आतंकरोधी अभियान के दौरान आतंकियों पर हमला करने में सहायक की भूमिका निभाएंगे। सुरक्षा बलों के लिए आतंकियों के विरुद्ध कार्यवाही में सबसे बड़ी चुनौती उनकी सही संख्या और उनके पास उपलब्ध हथियारों की पूरी जानकारी लेने की होती है। ये रोबोट अभियान के दौरान किसी भी मकान या अन्य गुप्त आतंकी ठिकाने में सरलता से घुसकर वहां की गतिविधियों की पूरी जानकारी लेजर किरणों से स्कैन कर सेना के सक्षम कंप्यूटरों में उतार देंगे। सैनिक रोबोट की प्रत्येक इकाई में एक लॉन्चिंग, एक ट्रांसमिशन और उजाले-अंधेरे की तस्वीरें लेने वाले एचडी कैमरे लगे होंगे। इनकी विशेषता यह होगी कि ये किसी भी आतंकी ठिकाने से 200 मीटर की दूरी से भी स्पष्ट वीडियो-आडियो भेज सकते हैं, जबकि इनकी हरकत के संकेत इन्हें 15 किमी की दूरी पर बैठे ही मिल जाएंगे। ये रिमोट नियंत्रण रेखा पर निगरानी और फिर उसके आस-पास ऐसी किसी जगह पर छानबीन कर सकते हैं, जहां घुसपैठियों के छिपे होने की आशंका हो। रोबो सैनिक की सेवा देने की उम्र 25 साल रहेगी। ये इतने चपल होंगे कि जवाबी कार्यवाही के लिए ये तुरंत 360 डिग्री घूमकर दुश्मन पर अचूक निशाना साधने में सक्षम होंगे। ये लड़ाकू रोबोट पानी के नीचे 20 मीटर की गहराई तक भी काम करने में दक्ष होंगे। इनमें रडार, जीएसएम और जीपीएस सिस्टम लगे होंगे, जो 10-15 किमी तक के स्थल को ट्रेस कर सेना के नियंत्रण कक्ष को जानकारी भेज देंगे।

लिहाजा उम्मीद यह की जा रही है कि यह रोबो आर्मी नियंत्रण रेखा पर दुश्मन की हर चाल से निपटने में सेना की अग्रिम पंक्ति के रूप में बेहतर सुरक्षा का काम करेगी। सेना की प्रत्येक बटालियन में सात से आठ अधिकारियों और जवानों को इसका विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। *

गजल
माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

डर ही डर है

हर शै में डर ही डर है
मन में दुख का सागर है
कल घर में थीं दीवारें
अब दीवारों में घर है
हरियाली का नाम नहीं
जिसको देखो बंजर है
कोई देख न पाएगा
हर-सू ऐसा मंजर है
कौन किसे समझाएगा
सबके दिल में खंजर है
हाल किसी का क्या बोलें
हालत बद से बदतर है
दस्तावेजों में 'नवरंग'
आज कड़ाही में सर है

व्यंग्य
संदीप भटनागर

गधे और गुलाब जामुन

गधों को ऑफिशियली गधा बनने के बाद से लेकर आज तक उनकी पीठ पर लदा बोझा नहीं उतरा। उन्हें बोझ की ऐसी लत लगी कि पीठ खाली होते ही खुद बोझा ढूंढने लगे। तभी से वे बोझ महसूस करके ही खुश रहने लगे। पीठ हल्की होते ही उन्हें लगता है कि कहीं मालिक नाराज तो नहीं हो गया।

मिष्ठदंती होने के नाते मुझे मिठाइयों से विशेष प्रेम है। संतुलित भोजन और मीठे से परहेज करने के तमाम निर्देशों के बावजूद बारंबार इनके रस जाल के मोह में पड़ना सुमधुर और स्वादिष्ट लगता है। पसंद के मामले में सभी पारंपरिक मिठाइयों में गुलाब जामुन सदैव नंबर वन रहा है। अपनी अतिप्रिय मिठाई के बारे में कुछ रोचक समाचार पढ़ने को मिले। मध्य प्रदेश के एक शहर में गधों को गुलाब जामुन खिलाए गए। दूसरे शहर में जिला अधिकारी द्वारा ज्ञापन नहीं लिए जाने पर आंदोलनकर्ताओं का प्रेम गधों पर उमड़ा। गधों ने गुलाब जामुन की दावत उड़ाई।

दिमाग हैरान परेशान! इस घोर पापी दुनिया में जहां एक इंसान दूसरे इंसान को बेमतलब जहर तक नहीं खिलाता, वहां गधों को गुलाब जामुन कैसे खिलाए जा रहे हैं? कहीं गधों और गुलाब जामुन का मेरी तरह कोई रिश्ता तो नहीं है? या हमारे देश में कोई नया रिवाज चालू हुआ है, जिसका मुझे कोई इल्म न हो।

किताबों की शरण में जाने पर पता चला कि न तो गधे हमारे हैं और न ही गुलाब जामुन। एक कहानी के मुताबिक गुलाब जामुन को मध्य युग में ईरान में बनाया गया था, जो कालांतर में तुर्कियों द्वारा भारत लाया गया। गधों के बारे में यह खबर मिली कि करीब सात हजार साल पहले इंसान ने पूर्वी अफ्रीका में गधों को गधा बनाने यानी कि पालतू बनाने का प्रयास किया था और वह अपने इस उद्देश्य में सफल भी रहा। गधों को ऑफिशियली गधा बनने के बाद से लेकर आज तक उनकी पीठ पर लदा बोझा नहीं उतरा। उन्हें बोझ की ऐसी लत लगी कि पीठ खाली होते ही खुद बोझा ढूंढने लगे। तभी से वे बोझ महसूस करके ही खुश रहने लगे। पीठ हल्की होते ही उन्हें लगता है कि कहीं मालिक नाराज तो नहीं हो गया।

एक अनुमान के अनुसार दुनिया भर में चवालीस मिलियन गधे हैं। अनुमान इसलिए कि जब जनगणना की चिंता कोई नहीं पालता तो गधों की गिनती करने की फुर्सत किसे है! और भला गधे भी कोई गिनने की चीज हैं? चवालीस मिलियन गधों में से 99% गधे निम्न और मध्यम आय वाले देशों में पाए जाते हैं। इस हिसाब से हमारे हिस्से में भी बड़ी संख्या में गधे आए हैं। मेरा ऐसा मानना है कि उच्च आय वाले देशों के गधे, घोड़ों की वेशभूषा धारण करने योग्य हो गए। इसी कारण वहां गधों में गिरावट दर्ज हुई है, लेकिन हमारे देश में अभी भी गधों को उनके मूल स्वरूप में उपयोगी माना जाता है। यह बात अलग है कि आजकल इंसान भी गधों का लबादा ओढ़ने लगे हैं।

इंसान से बेहद करीबी रिश्ता रखने वाला यह जानवर निरा गधा नहीं है। इनकी याददाश्त बहुत अच्छी होती है। ये करीब पचीस साल पहले तक देखे गए इलाकों को याद रख सकते हैं। और अधिक संख्या में होने के बावजूद, दूसरे इलाके के गधों को पहचान सकते हैं। उनकी इसी खूबी के कारण वे बगैर भटके अपनी मंजिल तक पहुंच जाते हैं।

इन्हें अकेले रहना पसंद नहीं। समूह में रहते हुए ये आपस में मजबूत सामाजिक संबंध स्थापित करते हैं। एक-दूसरे की देख-भाल करना और संकट के समय सहायता करना इनकी आदत है। इतनी सारी खूबियों के बावजूद ये गधे हैं और सामाजिक प्राणी होने का तमगा अकेले मनुष्य ने ही अपने गले में पहन रखा है।

इनकी तमाम विशेषताओं के लिए और मनुष्य के विकास में इनके महत्व को रेखांकित करने के लिए आर्क रजीक नाम के एक रहम दिल साइंटिस्ट की कोशिशों से वर्ष 2018 से 'विश्व गधा दिवस' मनाना आरंभ किया गया, लेकिन हमारे देश के गधे अभी इस सम्मान की बाट ही जोह रहे हैं।

इतनी सारी बातें जानने के बाद इस मूक प्राणी के लिए मन में सम्मान का भाव जागा, साथ ही यह जिज्ञासा भी जागी कि गधों को गुलाब जामुन में रुचि क्यों कर होने लगी? ऐसा तो नहीं कि लोगों को चारा हजम करते देख उनकी इंसानों से बदला लेने की भावना प्रबल हो गई हो? यह भी हो सकता है कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के बढ़ते प्रयोग से इंसानी अक्ल निठल्ली हो कर घास चरने लगी हो और आने वाले समय में घास का टोटा पड़ने वाला हो?

इन सारी संभावनाओं पर विचार करने के बाद मुझे पता चला कि इन बेचारों ने खुद गुलाब जामुन नहीं खाए बल्कि जुगाड़ इंसान ने अपने स्वार्थ के खातिर इन्हें गुलाब जामुन खाना सिखला दिया। कभी अच्छी बारिश की कामना के खातिर टोटके के रूप में तो कभी इंसानी गधों की अक्ल ठिकाने लगाने। गधे भी बेचारे इस उम्मीद में गुलाब जामुन खाए जा रहे हैं कि ईश्वर इंसान पर भले ही रहम न करे पर उन पर रहम कर बारिश तो करवा ही देगा। और आज न सही कल ही सही, हरी नरम दूब खाने को तो मिल जाएगी। बहरहाल, बारिश को गधों के भरोसे छोड़ इंसान द्वारा पर्यावरण में पलीता लगाने का काम बदस्तूर जारी है। वहीं दूसरी ओर गधों का लबादा ओढ़े इंसानों का गुलाब जामुन खाना भी जारी है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

सघन अनुभूति की कविताएं

हाल में सुपरिचित कवि शंकरानंद का चौथा कविता संग्रह 'जमीन अपनी जगह' प्रकाशित होकर आया है। भले ही इन कविताओं का आकार छोटा है लेकिन इनमें व्यक्त सघन अनुभूतियों का आयतन काफी विस्तारित है। ये अनुभूतियां केवल उनके निजी जीवन तक नहीं सिमटी हैं, वे अपने समय, समाज, देश और विश्व पर मंडराते संकटों पर भी नजर रखते हैं। *युद्ध से कुछ नहीं बचता/ ये और बात है कि इसका एहसास/ युद्ध खत्म होने के बाद होता है/ तब तक बहुत देर हो चुकी होती है* (युद्ध के बीच)। वे अपने आस-पास लगातार छीजती जा रही संवेदना से भी विचलित होते हैं, तभी 'नींद में आग' जैसी कविता रच पाते हैं। 'शोक के बीच' कविता में वह एक टीस के साथ इस सच को स्वीकारते हैं, *शोक के बीच पल रहा जीवन/ इस देश का दूसरा सच है/जो देखने नहीं दिया जाता अब।* कहने की जरूरत नहीं कि इन कविताओं के जरिए कवि की चिंताएं अलग-अलग रूपों में प्रकट हुई हैं। और उनकी चिंताएं हर संवेदनशील इंसान की चिंताएं हैं। *

पुस्तकः जमीन अपनी जगह (कविता संग्रह), **रचनाकारः** शंकरानंद, **मूल्यः** 295 रुपए, **प्रकाशकः** सेतु प्रकाशन, नोएडा

फेडोरा हैट, काउबॉय हैट, उशांका हैट

गर्मी के मौसम में धूप से बचने के लिए लोग तरह-तरह के हैट्स या कैप्स पहनते हैं। इससे ट्रेंडी, फैशनेबल और कूल लुक मिलता है। अपने देश में ही नहीं दुनिया भर में तरह-तरह के हैट्स और कैप्स पहनने का ट्रेंड रहा है। हम आपको दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में पॉपुलर कुछ ट्रेंडी-फैशनेबल हैट्स-कैप्स के बारे में बता रहे हैं।

स्टाइलिश-ट्रेंडी हैट्स-कैप्स

फैशन / शिखर चंद जैन

गर्मी के मौसम में धूप से बचाने के लिए सिर पर हैट या कैप पहनना अच्छा ऑप्शन है। लेकिन हैट या कैप सिर्फ सिर ढंकने के ही काम नहीं आता, यह आपकी पर्सनालिटी को डिफरेंट और इंप्रेसिव लुक भी देता है। तरह-तरह के हैट्स-कैप्स पर एक नजर।

बूनी हैट

बूनी हैट: यह सॉफ्ट फैब्रिक से बना होता है। इसके चारों ओर लंबाई में छज्जेनुमा डिजाइन होती है, जो कान और गर्दन पर पड़ने वाली धूप से बचाती है। इस हैट का उपयोग कई देशों में मिलिट्री के जवान करते हैं।

बोटर हैट: इसकी संरचना सीधी बुनी हुई होती है। यह सीधा टॉप और सीधे छज्जे लिए होती है। आमतौर पर इसे नाविक पहनते हैं या फिर गर्मी में आउटडोर पार्टियों में भी पहना जाता है। इस पर तरह-तरह के रिबन बांधकर इसे और आकर्षक बनाया जा सकता है।

बर्कसिन

बर्कसिन: इसे सबसे लंबी हैट माना जाता है। यह कानों समेत पूरा सिर कवर किए रहता है। पहनने पर यह काफी ऊंचा दिखाई देता है। यह फर से बना होता है। इसमें ऊपरी हिस्से से भी फर लटके होते हैं। यह कैजुअल वियर के तौर पर नहीं पहना जाता है। इसे मैचिंग ड्रेस कोड के साथ ही पहना जाता है।

पनामा: इक्वेडोर में बना यह हैट घास और पौधों की पत्तियों से बना होता है। यह हैट बहुत ही सॉफ्ट और अट्रैक्टिव दिखता है।

बाउलर/डर्बी हैट: इस हैट का निर्माण 1850 में सेंट जेम्स ने किया था। जेम्स ने ही लीसेस्टर में थॉमस कुक के कर्मचारियों के लिए इस हैट का निर्माण किया था। बाद में यह डर्बी हैट के नाम से पॉपुलर हो गया।

गेटस्बी: इसे न्यूसबॉय हैट के नाम से भी जाना जाता है। इसमें सिर के ऊपर से आठ भाग निकलते हैं, जो जुड़कर एक टोपी का आकार लेते हैं। किनारे पर आकर यह गोलाकार हो जाते हैं। इसमें आगे की ओर छज्जा होता है।

हमबर्ग: यह चौड़े किनारों वाला हैट बहुत आकर्षक दिखता है। इसे जर्मनी में काफी पहना जाता है।

काऊबॉय हैट: अपने ग्लैमरस लुक के कारण यह काफी प्रचलन में है। इसके किनारे काफी लंबे होते हैं। लंबे किनारों के कारण यह रफ-टफ काम में आरामदायक साबित होती है। लंबे किनारे बरसात और धूप से हैट पहनने वाले को बचाए रखते हैं।

अकूबरा हैट

पनामा हैट

टूडूर बोनट हैट

सांता कैप

फेडोरा: यह हैट कोमल फैब्रिक से बना होता है। इसके आगे की तरफ छोटी छज्जेनुमा संरचना होती है, जबकि पीछे की तरफ यह संरचना बिल्कुल कम हो जाती है। इसके छज्जे के बाद ऊपर की ओर रिबन बंधा रहता है।

ट्रीकोन/ट्रायकॉर्न: परंपरागत रूप से यह हैट ट्रीकोन नामक सॉफ्ट फैब्रिक से बना होता है। चौड़े किनारों वाले इस हैट के किनारे ऊपर की ओर मुड़े होते हैं। जो एक पिन के माध्यम से हैट से जुड़ते हैं। यह पीछे की ओर से पिन से बंधा होता है। इस तरह इसका आकार तीन तरफा होता है।

स्लाउच: यह हैट एक ओर कान की तरफ से ऊपर की ओर मुड़ा होता है। इसके आगे और पीछे के किनारे ज्यादा लंबे होते हैं। सामने और कान के ऊपर की ओर एक बक्कल लगा होता है। यह हैट ज्यादातर हॉर्स राइडर्स और आर्मी के जवान पहनते हैं।

सांब्रेरो: पानी में तैरते टापू की तरह दिखने वाला यह मैक्सिकन हैट ऊपर से एकदम उठा होता है। इसके चारों ओर किनारे लंबे होते हैं। ये किनारे हैट के किनारों तक आते-आते वापस ऊपर की ओर मुड़ते हैं।

टोप हैट: यह एक खड़ा-लंबा हैट होता है, जिसकी छत सपाट होती है। यह चारों ओर गोलाई में होता है और दूसरे हैट्स की तुलना में ज्यादा ऊंचाई लिए होता है। चारों ओर किनारे वाला यह हैट 19वीं-20वीं शताब्दी में संभ्रांत लोगों यानी एलीट क्लास के लोगों द्वारा पहना जाता था।

टूडूर बोनट: यह मुलायम हैट उल्टी हांडी की तरह दिखाई देता है। यह अकादमी से जुड़ा हैट माना जाता है। इस हैट की खासियत इसमें बंधने वाला रस्सीनुमा फूंदना होता है। इस हैट को अपनी मर्जी के अनुसार टाइट या ढीला किया जा सकता है।

टोप हैट

फेज: यह लाल रंग का बिना किनारे वाला हैट होता है। इसमें कोई किनारा नहीं होता। अफ्रीकी इस्लामिक देशों में रहने वाले लोग इसे ज्यादा पहनते हैं।

उशांका: इसे रूसी हैट माना जाता है। यह फर से बना होता है, जो गर्माहट देता है। इसमें किनारों पर मुड़े हुए छज्जे नहीं होते हैं। लेकिन हैट का निचला हिस्सा कानों को कवर करता है।

केपी: यह फ्रांस की मिलिट्री हैट है। सधी हुई गोलाई में बनी यह हैट पहनने वाले को गर्माहट देती है। इसके आगे बना छज्जा इस तरह का होता है कि आंखों को साइड में देखने में कोई परेशानी नहीं होती। यह छज्जा सिर्फ आंखों के ऊपर तक ही होता है।

अकूबरा: यह ऑस्ट्रेलिया में पहनी जाने वाली पॉपुलर कैप है, जो कुछ-कुछ फेडोरा और काऊबॉय हैट जैसी लगती है।

सांता कैप: पारंपरिक रूप से यह क्रिसमस त्योहार पर पहनी जाने वाली कैप है। गहरे लाल रंग की यह कैप पीछे से लंबाई में लटकती है। इसमें सफेद फर किनारों पर लगे होते हैं। *

बेसबॉल कैप

यह सॉफ्ट कैप होती है। दिखने में यह स्पोर्ट्स कैप जैसी दिखती है। इसका छज्जा लंबाई में निकला होता है। यह सिर से कानों तक कवर करती है।

यह सही है कि किसी भी फील्ड में सक्सेस के लिए नॉलेज होना जरूरी है। लेकिन इसके साथ ही अपनी नॉलेज और वर्किंग स्टाइल को दूसरों के सामने इंप्रेसिव तरीके से प्रेजेंट करना भी बहुत जरूरी होता है। यह क्यों जरूरी है, जानिए।

सक्सेस के लिए बहुत जरूरी है
प्रेजेंटेशन को बनाएं इंप्रेसिव

सक्सेस मंत्र
कीर्तिशेखर

आज के दौर में ज्ञान के साथ-साथ खुद को पेश करने की कला भी सफल करियर का अभिन्न हिस्सा बन गया है। यह सिर्फ कहने वाली बात नहीं है। समय-समय पर हुए सर्वेक्षणों के आंकड़े भी इस ओर इशारा करते हैं कि बेहतर नौकरी पाने के लिए तकनीकी कुशलता का महज 15 फीसदी योगदान होता है, जबकि बचा हुआ 85 फीसदी सामाजिक और व्यावसायिक सलीके से जुड़ा होता है। इसलिए हमें डिग्रियों या तकनीकी कुशलता के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान पर विशेष तौर पर फोकस करना चाहिए। इसके अलावा खुद को पेश करने की उस कला में भी पारंगत होना चाहिए, जिससे बड़ी संख्या में लोग अनभिज्ञ होते हैं।

कॉम्पिटिशन है बहुत: इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज बाजार में बेहतर से बेहतर विकल्प मौजूद हैं। नौकरी पाने वालों के लिए भी और नौकरी देने वालों के लिए भी। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि नौकरी देने वालों के सामने विकल्प (अनएंप्लॉयड लोग) बड़ी तादाद में उपलब्ध हैं, जबकि नौकरी पाने वालों के सामने विकल्प एक संघर्ष के तौर पर मौजूद है। संघर्ष इसलिए कि दूसरों से खुद को बेहतर वर्किंग प्रोफेशनल सिद्ध करना होता है। सवाल है, ऐसे में क्या किया जाए? इसका भी जवाब है कि खुद को पेश करने की कला में स्मार्ट हुआ जाए।

कैसे करें स्मार्टली प्रेजेंट: अब सवाल उठता है कि खुद को कैसे पेश किया जाए ताकि हम पहली ही मुलाकात में सामने वाले को आकर्षक और अपनी ओर ध्यान खींचने वाले साबित हो सकें। हालांकि आज की तारीख में अधिकतर यंगस्टर्स खूबसूरत, स्मार्ट और ऊर्जावान दिखने का प्रयास करते ही हैं। मनचाही नौकरी हासिल करने के प्रयास के दौरान प्रेजेंटेबल दिखने के लिए अपने गुड लुक, स्मार्ट और एनर्जेटिक होने के साथ-साथ हमें चाहिए कि हम अपने बिहेवियर में एटिकेट्स और लीडरशिप क्वालिटीज को भी शामिल करें। साथ ही अपनी नॉलेज और इंफॉर्मेशंस को भी लगातार अपडेट करते हुए इसमें शामिल करें। इसमें कोई दो राय नहीं है कि जब तक हम अपने एरिया की नॉलेज और जानकारियां हासिल नहीं कर लेते, तब तक लीडरशिप नहीं निभा सकते। वैसे भी आत्मविश्वास तभी आ सकता है, जब हम ज्ञान से लबरेज हों। इसलिए सबसे पहले हमें अपनी फील्ड की भरपूर और लेटेस्ट जानकारियों के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। बेहतर भविष्य की चाह है तो खुरदुरे राह को खुद ही आसान बनाने का जिम्मा उठाना होगा।

न करें संकोच: खुद को पेश करने की कला यानी आर्ट ऑफ प्रेजेंटेशन में पारंगत होने के लिए सबसे पहले यह जानें कि आखिर खुद में कमी कहां-कहां है? सामान्यतः लोगों में देखने में आता है कि वे अकसर कोई इनिशिएटिव लेने से घबराते हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि उनके दिमाग में यह सवाल बार-बार आता रहता है कि कहीं लोग उनकी बात या आइडिया का मजाक तो नहीं उड़ाएंगे? अगर आप इस ख्याल से ग्रस्त हैं तो ध्यान रखें कि आपकी मंजिल अभी बहुत दूर है। अगर आप सफलता को पाना चाहते हैं तो इस बात को गांठ बांध लें कि शुरुआती दिनों में आपके आइडियाज पर लोग हंसेंगे, उसका मजाक बनाएंगे, उसे पहली नजर में ही नकार देंगे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप असफल हैं। इसका मतलब यह है कि आपमें वो काबिलियत है, जिससे दूसरे लोग घबराते हैं और आपको उभरने नहीं देना चाहते। कहने का मतलब यह है कि अगर लोग आपके नए आइडियाज को गंभीरता से नहीं लेते हैं तो आप उस पर कुछ वर्क करके उसके कुछ रिजल्ट सामने पेश कर खुद को प्रूफ कर सकते हैं।

इन बातों पर दें ध्यान: इंप्रेसिव प्रेजेंटेशन के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि सोसाइटी में, पर्सनल-प्रोफेशनल मीटिंग्स और कॉर्पोरेट गेदरिंग में कैसे व्यवहार करना चाहिए? इसके लिए सेल्फ कॉन्फिडेंस, एटिकेट्स, लुक्स, टेबल मैनर्स, बॉडी लैंग्वेज में सुधार, बातचीत का सलीका, सही उच्चारण की ट्रेनिंग, एंगर मैनेजमेंट, कुलीग्स पीयर प्रेशर मैनेजमेंट, स्ट्रेस मैनेजमेंट के बारे में जानकारी होनी जरूरी है। *

रोचक
अभिव्यक्ति त्रिवेदी

भारत को गांवों का देश कहा जाता है। इनमें से कुछ गांव ऐसे हैं, जो अपनी अनोखी विशेषता के कारण पूरे देश में प्रसिद्ध हैं। ऐसे ही कुछ अनोखे गांवों के बारे में जानिए।

भारत के ये गांव हैं अनोखे

माधोपट्टी आईएएस की फैक्ट्री: उत्तर प्रदेश के जौनपुर में माधोपट्टी नाम का एक गांव ऐसा है, जिसे 'आईएएस की फैक्ट्री' कहा जाता है। इस गांव ने देश को कई आईएएस अधिकारी दिए हैं। यहां से सबसे ज्यादा लोग सिविल सर्विसेज में सफल होते हैं। लगभग 75 परिवारों वाले इस गांव के करीब 47 लोग आईएएस, आईपीएस और आईआरएस जैसे पदों पर कार्यरत हैं। गांव के कई लोग देशभर में बड़े पदों पर तैनात रहे हैं। जिला मुख्यालय से 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह गांव तब चर्चा में आया था, जब एक ही परिवार के 5 लोग आईएएस ऑफिसर बने थे। यहां पुरुष ही नहीं, कई महिलाओं का चयन भी सिविल सर्विसेज में हुआ है, वो भी बिना किसी कोचिंग के। यही वजह है कि माधोपट्टी गांव को आईएएस, आइपीएस की 'फैक्ट्री' कहा जाने लगा है।

चंदनकी जहां किसी घर में खाना नहीं बनता: गुजरात में एक छोटा-सा गांव है चंदनकी। इस गांव में ज्यादातर लोग बुजुर्ग हैं। गांव के अधिकतर युवा शहरों या विदेशों में सैटल हो गए हैं। पहले इस गांव की आबादी लगभग 1,100 थी, जो अब करीब 500 रह गई है और इनमें से ज्यादातर बुजुर्ग हैं। इस गांव में रह रहे बुजुर्गों में से कोई भी घर में खाना नहीं बनाता। दरअसल, गांव के सभी लोगों ने मिलकर कम्युनिटी किचेन शुरू किया है। इस किचेन में पूरे गांव के लिए खाना बनता है और हर व्यक्ति को महीने में महज 2000 रुपए की राशि देनी होती है। इसमें उन्हें महीने भर दोनों समय भरपूर भोजन मिलता है। इस रसोई में विभिन्न प्रकार का पारंपरिक गुजराती खाना परोसा जाता है, जिसे पोषण का ध्यान रखकर बनाया जाता है। रसोई के जिस हॉल में लोग बैठकर खाना खाते हैं, वह एयर कंडीशंड हॉल है। इसके लिए सोलर पावर के जरिए बिजली का इस्तेमाल किया जाता है। गांव वालों के लिए ये सिर्फ खाना खाने की जगह नहीं है, बल्कि यहां बैठकर वे सुख-दुख भी बांटते हैं। इस अनोखे आइडिया के पीछे गांव के सरपंच पूनमभाई पटेल हैं, जो न्यूयॉर्क में 20 साल बिताने के बाद अहमदाबाद में अपना घर छोड़कर चंदनकी गांव लौट आए। उन्होंने गांव के बुजुर्गों को खाना बनाने के लिए स्ट्रगल करते देखा, तभी उनके दिमाग में यह आइडिया आया और उन्होंने कम्युनिटी किचेन का कॉन्सेप्ट लोगों को समझाया।

मधापार एशिया का सबसे अमीर गांव: गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है दुनिया के सबसे अमीर गांवों में से एक और एशिया का सबसे अमीर गांव मधापार। करीब 7,600 घरों वाले इस गांव में 17 बैंक हैं। इन सभी बैंकों में ग्रामीणों के लगभग 7 हजार करोड़ रुपए जमा हैं। 17 बैंकों के अलावा इस गांव में स्कूल, कॉलेज, झील, हरियाली, बांध, स्वास्थ्य केंद्र, मंदिर तथा अत्याधुनिक गौशाला भी हैं। दरअसल, मधापार गांव के ज्यादातर लोग एनआरआई हैं, जो यूके, यूएसए, कनाडा समेत दुनिया के कई अन्य हिस्सों में रहते हैं। उन्होंने देश के बाहर पैसे कमाकर गांव की तरक्की में योगदान कर यहां पैसा जमा किया।

कोडिन्ही जुड़वां बच्चों का गांव: इमेजिन कीजिए कि आप कहीं जाएं और वहां एक जैसे दिखने वाले कई सारे लोग एक साथ आपकी नजर के सामने आ जाएं! ऐसा हो सकता है, केरल के कोडिन्ही गांव में। इस गांव में देश में सबसे ज्यादा जुड़वां बच्चे पैदा होते हैं। देश में जहां जुड़वां बच्चों का राष्ट्रीय औसत 1000 जन्मों में 9 के आस-पास है, वहीं कोडिन्ही में यह संख्या 1000 जन्मों में 45 से अधिक है। यह गांव शोधकर्ताओं के लिए किसी रहस्य जैसा है।

शनि शिन्नापुर यहां घरों में नहीं हैं दरवाजे: महाराष्ट्र के इस गांव में घर तो हैं, लेकिन किसी घर में दरवाजा नहीं लगाया जाता है। यहां आने वाले लोग/पर्यटक भी बिना दरवाजों वाले गेस्ट हाउस में ही रुकते हैं। ऐसी मान्यता है कि भगवान शनि इस गांव के रक्षक हैं। उनके होते हुए गांव में चोरी संभव नहीं है। *

मॉडलिंग से एक्टिंग की दुनिया में आईं निम्रत कौर इन दिनों अपनी नई वेब सीरीज 'कुल-द लिगेसी ऑफ द रायसिंह्स' को लेकर चर्चा में हैं। इसमें वह राजघराने की महिला इंद्राणी रायसिंह के रोल में दिख रही हैं। इस रोल को निभाने के लिए उन्हें कैसी तैयारी करनी पड़ी, उनकी फ्यूचर प्लानिंग्स क्या हैं? फिल्म और करियर से जुड़ी बातचीत निम्रत कौर से।

मैं जरा भी बिजनेस माइंडेड नहीं हूं: निम्रत कौर

खास मुलाकात / पूजा सामंत

जियो हॉटस्टार पर पिछले दिनों नई वेब सीरीज 'कुल-द लिगेसी ऑफ द रायसिंह्स' रिलीज हुई है। इस शो की प्रोटोगनिस्ट (मुख्य पात्र) हैं निम्रत कौर। एक शाही घराने की इस रंजिशभरी कहानी में निम्रत ने इंद्राणी रायसिंह का किरदार निभाया है। इस शो के अलावा और भी कई विषयों पर हाल में उनसे लंबी बातचीत हुई। प्रस्तुत है इस बातचीत के प्रमुख अंश-

हाल में वेब सीरीज 'कुल-द लिगेसी ऑफ द रायसिंह्स' रिलीज हुई है। इसे आपने क्यों एक्सेप्ट किया और इसमें अपने किरदार के बारे में कुछ बताइए।

मुझे इस शो की कहानी और इसमें मेरा किरदार दोनों अच्छे लगे। मैंने आज तक इतना उलझा हुआ, इतना कॉम्प्लेक्स किरदार नहीं निभाया था। शो में मेरे किरदार का नाम है इंद्राणी रायसिंह, जो परिवार की दो बहनों में बड़ी बहन है। परिवार में बड़ी बहन होने के कारण इंद्राणी अपनी जिम्मेदारी निभाना बखूबी जानती है। अपनी बहन को लेकर इंद्राणी बहुत प्रोटेक्टिव भी है। इंद्राणी के शाही परिवार में एक साथ कई कहानियां चलती हैं। कई शॉकिंग घटनाएं घटती हैं। किरदारों की परतें खुलती जाती हैं।

'कुल-द लिगेसी ऑफ द रायसिंह्स' में को-एक्टर्स के साथ निम्रत कौर

पर्सनल लाइफ में भी आप बड़ी बहन हैं, क्या कुछ समानता है आपमें और इंद्राणी रायसिंह में?

पर्सनल लाइफ में मैं अपनी छोटी बहन रुबीना की दीदी हूं। हमारा रिश्ता बेहद प्यारा और एक-दूसरे को स्पेस देने वाला है। जब भी उसे जरूरत होती है, मैं उसे गाइड करती हूं। मेरी बहन बहुत इंटेलिजेंट है। वह एक साइकोलॉजिस्ट है। मुझे उस पर नाज है।

क्या आपको इंद्राणी की भूमिका निभाने के लिए कुछ होमवर्क करना पड़ा?

यह महलों में रहने वाले शाही परिवार की कहानी है। शो की कहानी और किरदारों में कई ट्विस्ट एंड टर्न्स आते हैं। इंद्राणी रायसिंह राजघराने की ऐसी महिला है, जिसकी लाइफ में कई अप्स एंड डाउंस आते हैं। चूंकि मैं वास्तव में एक मध्यम वर्गीय परिवार से आती हूं, इसलिए इंद्राणी के किरदार, उसके मेंटल स्टेटस को समझना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल रहा। इसके किरदार को निभाने के लिए मुझे खुद को फिजिकली से ज्यादा मेंटली प्रिपेयर करना पड़ा।

'लंच बॉक्स', 'एयरलिफ्ट' जैसी फिल्मों की सफलता के बाद लगा कि आपकी फिल्में लगातार आती रहेंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अच्छे ऑफर नहीं मिले या आप फिल्मों को लेकर काफी सेलेक्टिव हैं?

मेरे लिए ही नहीं, कई सारे लोगों के लिए कोरोना लॉकडाउन के दौर ने जीवन के दो वर्ष में सब कुछ रोक दिया था। उससे थोड़ा पहले मैंने विदेश में काफी काम किया। जैसे ही कोरोना पीरियड खत्म हुआ, साल 2022 से धीरे-धीरे काम पटरी पर आने लगा। मैंने अपने काम का रुख इंडिया में ही केंद्रित किया। जो काम बैकलॉग में किया था, वो अब धीरे-धीरे रिलीज हो रहा है। अमेरिकन टीवी सीरीज 'होमलैंड' मैंने वहां जाकर शूट किया। 2023 में मैंने साइंस फिक्शन सीरीज में काम किया। अब चूंकि इनमें से ज्यादातर काम मेन स्ट्रीम से थोड़ा अलग था, इस वजह से ये मान लिया गया कि मैं फिल्मों से दूर थी, जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है।

आज के दौर की अधिकतर एक्ट्रेसेस, बिजनेस माइंडेड हैं, वे खुद को सक्सेसफुल एंटरप्रेन्योर के रूप में स्थापित कर रही हैं। आलिया भट्ट, दीपिका पादुकोण, अनुष्का शर्मा, कृति सेनन की तरह आप क्या फिल्म प्रोडक्शन के फील्ड में जाना चाहती हैं?

अगर कोई फिल्म निर्माण की पूरी जिम्मेदारी, खासकर बिजनेस पार्ट संभाल ले तो मैं को-प्रोड्यूसर बनने के लिए रेडी हूं। मैं जरा भी बिजनेस माइंडेड नहीं हूं। मैं फौजी जवान, किसान (मां की तरफ से) की बेटी हूं, बिजनेस करने में कच्ची हूं। मुझे फाइनेंस आंकड़ों की गुत्थी समझ नहीं आती। इसलिए मैं अब तक बिजनेस से दूर ही रही हूं।

आजकल सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग बहुत कॉमन है, इस ट्रोलिंग को आप किस नजरिए से देखती हैं? आप खुद ट्रोलिंग को कैसे हैंडल करती हैं?

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर मेरी इन्वॉल्वमेंट कम से कम होती है। ये सच है कि आज के युग में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का होना एक नेसेसिटी भी बन गई है। यहां सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल कौन, कैसे करता है। जहां तक ट्रोलिंग या ट्रोलर्स की बात है, तो मुझे लगता है उनमें काफी नेगेटिविटी भरी होती है। कई बार ट्रोल्स के शिकार लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, वे डिप्रेशन में जा सकते हैं। मैं तो ट्रोलर्स के नेगेटिव कमेंट्स पढ़ती ही नहीं।

अगर आपको बायोपिक करना हो तो किसकी बायोपिक करना चाहेंगी?

मैं लेखिका अमृता प्रीतम की बायोपिक करना चाहती हूं। अमृता प्रीतम की आत्मकथा 'रसीदी टिकट' मैंने कई बार पढ़ी है। मैं उनसे काफी प्रभावित भी रही हूं। वक्त से काफी आगे थी अमृता जी। बहुत संवेदनशील लेखिका, हर रिश्ते को उन्होंने बड़ी शिद्दत और सहजता से स्वीकार करते हुए निभाया। निस्वार्थ प्रेम था उनका।

आपके आने वाले प्रोजेक्ट्स कौन-कौन से हैं?

इसी वर्ष मेरी कम से कम तीन फिल्में रिलीज होंगी। साथ ही ओटीटी पर कुछ वेब शो भी दर्शक देख पाएंगे। *